



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

मनुष्य जन्म को  
दुर्लभ कहा गया है।  
जिन्हें यह प्राप्त है, वे  
मनुष्य जन्म का मूल्यांकन  
करना सीखें।  
- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 48 • 2 सितम्बर - 8 सितम्बर, 2024



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 31-08-2024 • पेज 20

₹ 10 रुपये

## आचार्य श्री तुलसी का उपहार- बच्चों के लिए वरदान : आचार्यश्री महाश्रमण

■ ज्ञानशाला दिवस पर 1008 ज्ञानार्थियों द्वारा  
महावीर समवसरण में दी गई भव्य प्रस्तुति

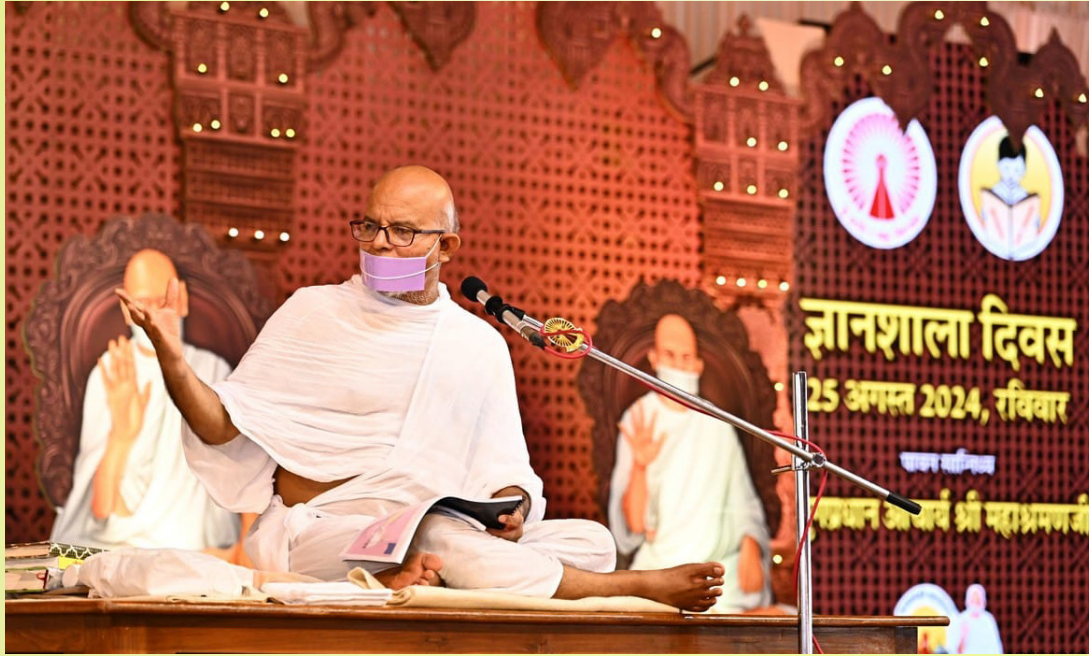
■ आराध्य के श्रीमुख से ज्ञानार्थियों  
ने पाया वर्धमानता का शुभाशीष

सूरत।

25 अगस्त, 2024

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में सिल्क सिटी सूरत का संयम विहार ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर दक्षिण गुजरात से हजारों ज्ञानार्थियों की अद्भुत प्रस्तुति से गुंजायमान हो उठा। जिस प्रकार 15 अगस्त और 26 जनवरी को भारत की शौर्य और संस्कृति की गाथा भारतीय सेना एवं चयनित जनता प्रस्तुत करती है, ठीक उसी प्रकार, भिन्न-भिन्न परिधानों में परेड के रूप में 12 देवलोक के नाम से 12 बटालियन के रूप में तेरापंथ धर्म संघ की अमृत गाथा, संघीय संस्थाओं एवं उनके आयामों को नन्हे-नन्हे ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी प्रस्तुत कर रहे थे।

आध्यात्मिक संस्कारों के प्रदाता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने ज्ञानार्थियों को फरमाया कि हमें अच्छा जीवन जीना चाहिए उसके लिए अच्छे संस्कार भी जरूरी है। विद्यालय, पारिवारिक जन आदि के द्वारा अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं। दादा-दादी, नाना-नानी एवं अन्य परिजन बच्चों पर संस्कारों की वर्षा करते रहें। जिस प्रकार बारिश से खेत की फसल अच्छी होती है, उसी प्रकार चारों ओर से बच्चों पर संस्कारों की बारिश हो तो बच्चे संस्कारी बन सकते हैं। साधु-साध्वियां और समणियां भी अच्छे संस्कार देने में सहायक बन सकते हैं।



ज्ञानशाला तेरापंथ धर्म संघ का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। इसका बीजारोपण गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने किया था। संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की एक प्रवृत्ति है- ज्ञानशाला, जो स्थानीय तेरापंथी सभाओं और अन्य संस्थाओं से जुड़ी हुई है। ज्ञानशाला के उपक्रम का विकास हुआ है। इसका तंत्र-प्रबंधन अच्छा है। छोटे बच्चे भी धार्मिक प्रवृत्ति से इसके माध्यम से जुड़ते हैं। अनेक विषयों पर ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति भी समय-समय पर होती रहती है। ज्ञानशाला से जुड़े रहने के कारण बच्चे कुसंस्कारों से बचे रह सकते हैं। अभिभावक भी अपने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजते हैं। ज्ञानशाला सेवा

देने वाले प्रशिक्षक आदि सेवा देते हैं। धार्मिक सेवा एक अच्छी बात है।

ज्ञानशाला के कारण और भी नये उपक्रम धर्मसंघ में शुरू हुए हैं। संकल्प भी बच्चों द्वारा बोले जाते हैं। संकल्प संस्कार निर्माण करने वाले होते हैं। बच्चे समाज और देश का भविष्य होते हैं। मंत्र दीक्षा में भी बच्चों को संकल्प दिलाये जाते हैं। ज्ञानशाला के बच्चे संस्थाओं के अध्यक्ष बनें अथवा न बनें, कोई पद पाएं अथवा न पाएं, किन्तु तेरापंथ समाज के अच्छे श्रावक-श्राविका, अथवा साधु-साध्वी, समण-समणियां अवश्य बनें। हमारे अनेक ज्ञानशाला से जुड़े लोग धर्मसंघ में चारित्रात्माओं के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। सूरत जैसे

शहर की ज्ञानशाला और ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक भी सूरत में हैं तो फिर कहना ही क्या। ज्ञानशाला के बच्चों का अच्छा रूप सामने आया है। व्यवस्था तंत्र, प्रशिक्षण तंत्र और अभिभावकों का योगदान होने से ज्ञानशाला का रूप सामने आता है। ज्ञानार्थियों व ज्ञानशालाओं की संख्या बढ़ती रहे, अच्छा विकास हो और यह बच्चों के लिए वरदान साबित हो।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आगम अनुसंधाता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम पर मंगल देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारी दुनिया में अहिंसा भी जीवित है और हिंसा भी विद्यमान है। अहिंसा कभी भी पूर्णतया समाप्त नहीं होती और यह भी मुश्किल

है कि हिंसा पूरी तरह से समाप्त हो जाए। कहीं हिंसा ज्यादा दिखाई दे सकती है, तो कहीं अहिंसा का साम्राज्य प्रतीत हो सकता है। यदि हिंसा है तो अहिंसा का दीप जलाने का प्रयास किया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति अपने विचारों के कारण कोई भय के कारण तो कोई आत्मरक्षा के संदर्भ में हिंसा में प्रवृत्त हो सकता है। बच्चों में भी हिंसा के संस्कार उत्पन्न हो सकते हैं, लेकिन अच्छे संस्कार भी उभर सकते हैं। बाल पीढ़ी में हिंसा के संस्कार क्षीण हों और अच्छे संस्कार उजागर हों। शिक्षा जगत के लिए जीवन विज्ञान का कार्यक्रम चलता है, जिससे विद्यार्थियों में बचपन से ही अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं। विद्यालयों में संस्कार निर्माण का कोर्स चलाया जाना चाहिए। अभिभावक भी अच्छे संस्कार देने का आधार बन सकते हैं।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने ज्ञानार्थियों को रोचक कहानी के माध्यम से समझाया कि ज्ञानशाला के माध्यम से संस्कारों की जड़ों को मजबूत किया जा सकता है। ये संस्कार लेकर ही बच्चे आगे जाकर परिवार, समाज व देश हित में कार्य करते हैं। ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ज्ञानशाला दिवस आचार्यश्री की विशेष कृपा का परिणाम है। असाढ़ा में कल्याण परिषद की मीटिंग में भाद्रपद माह का पहला रविवार ज्ञानशाला दिवस के रूप में मनाना तय हुआ था। (शेष पेज 12 पर)





# आत्मा में रमण करना साधु के लिए है श्रेयस्कर : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

22 अगस्त, 2024

धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम वाणी की अमीवर्षा कराते हुए फरमाया कि हर आदमी के पास अतीन्द्रिय ज्ञान होना जरूरी नहीं लगता है। केवलज्ञानी तो सर्वज्ञ, संपूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान के धारक, उत्पन्न ज्ञान, दर्शन के धारक अर्हत् होते हैं। उनके भीतर से ज्ञान उत्पन्न हो गया है। केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए कॉलेज में पढ़ाई करनी जरूरी नहीं है। केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी विश्व विद्यालय के प्रमाण की अपेक्षा नहीं रहती। वह तो भीतर से उभरने वाला ज्ञान होता है। मनःपर्यव ज्ञान किसी-किसी साधु में हो सकता है, गृहस्थ में तो वह भी नहीं होता। अवधिज्ञान, विभंग अज्ञान भी हर किसी मनुष्य के पास नहीं होते हैं।

ऐसी स्थिति में अर्हत्तों का उपदेश, उनकी आज्ञा या आगम एक आधार बन सकते हैं। साधु के लिए आगम या अन्य ग्रन्थ एक आलम्बनभूत बन सकते हैं। आगम तो शिरोमणि ग्रन्थ होते हैं। आगम के अलावा आचार्य श्री भिक्षु व पूज्य जयाचार्य द्वारा प्रणीत साहित्य हैं, वे हमारी तेरापंथ परंपरा के लिए महत्वपूर्ण हैं। आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ के



आधारभूत रहे हैं तो जयाचार्य आचार्य भिक्षु के भाष्यकार रहे हैं। आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का साहित्य भी हमें प्राप्त होता है।

आयारो में कहा गया है कि जो साधु अनाज्ञा में वर्तन करते हैं, आत्मा में रमण नहीं करते हैं, अर्हत्तों के उपदेश का अनुसरण नहीं करते हैं वे काम-भोगों में अपने चित्त को लगा देते हैं। साधु बन जाना अच्छी बात है, परन्तु छोटे गुणस्थान में प्रमाद हो सकता है। साधु

कभी आसक्ति, मोह में चला जा सकता है, और अधिक विषयासक्त हो जाए तो उसका साधुपन भी जा सकता है। छोटी चोरी, गलत बात बोल दे तो साधुपन नहीं जाता, किन्तु दोष लग सकता है। बड़ी चोरी, हिंसा, हत्या में जाने पर साधुपन समाप्त हो जाता है। इसलिए साधु को आत्मरमण करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया- प्रमाद के बारे में मैं एक चिंतन कर

पाया हूं कि प्रमाद दो प्रकार का होता है- एक तो तीसरा आश्रव प्रमाद है, एक अशुभ योग रूप प्रमाद होता है। प्रमत्त संयत गुणस्थान में हर समय अशुभ योग प्रमाद होना आवश्यक नहीं है, पर प्रमाद आश्रव छोटे गुणस्थान में हमेशा रहेगा। छोटे गुणस्थान वाले साधु के मिथ्यात्व आश्रव नहीं है, अध्य आश्रव नहीं है, परंतु प्रमाद, कषाय और योग आश्रव विद्यमान रहते हैं। छोटे गुणस्थान में साधु स्वाध्याय कर रहा है, शुभ योग में है, पर

जब तक वह छोटे से सातवें गुणस्थान में नहीं आ जाता, उसके प्रमाद आश्रव चालू है। छोटे गुणस्थान में प्रमाद आश्रव की नियमा है और अशुभ योग रूपी प्रमाद आश्रव की भजना है, यह मेरा निष्कर्ष है।

भौतिक साधनों में भी साधु अनासक्त रहे। संयम के हीरे के सामने भौतिक चीजें तुच्छ हैं। उनके जाल में त्यागी साधु न फंसें। हमारे मन से भी बहुत पाप लग सकते हैं। जितना पाप का बंधन संज्ञी प्राणी करते हैं, उतना पाप का बंध असंज्ञी प्राणी नहीं कर सकते। असंज्ञी प्राणी नरक में जायेंगे तो पहली नरक में ही जायेंगे। संज्ञी प्राणी तो सातवीं नरक तक जा सकते हैं। संज्ञी प्राणियों में भी पुरुष जितना पाप कर सकते हैं, महिला उतना पाप नहीं कर सकती। महिला तो ज्यादा से ज्यादा छोटी नरक तक जा सकती है। संज्ञी प्राणी जितना धर्म कर सकते हैं, उतना धर्म असंज्ञी प्राणी नहीं कर सकते हैं। संज्ञी प्राणी वीतराग बन सकते हैं। पाप करने, धर्म करने व पुण्य बांधने में संज्ञी मनुष्य, असंज्ञी से आगे रहते हैं। हम आत्मा में जितना रमण करें उतना हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने मुनि गजसुकुमाल के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया। (शेष पेज 12 पर)

# अलोभ और संतोष की साधना से लोभ को जीतें : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

24 अगस्त, 2024

जिनशासन भास्कर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम की विवेचना कराते हुए फरमाया कि हमारी चेतना में लोभ भी विद्यमान है तो साथ में अलोभ की चेतना भी भीतर में होती है। लोभ भी एक भाव है, चित्त धर्म है, औदायिक भाव है। अलोभ भी एक चित्त धर्म है, जो मोहनीय कर्म के विलय से सम्बद्ध है।

वीतराग बनने के लिए लोभ से मुक्त होना जरूरी है और मोक्ष की प्राप्ति के लिए वीतरागता जरूरी है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए केवलज्ञान-केवलदर्शन की प्राप्ति भी जरूरी है। जिसका क्षीण मोह नष्ट हो जायेगा वह वीतराग बन जाता है, उसे तुरंत केवलज्ञान-केवलदर्शन की प्राप्ति होती ही है। आठों कर्मों की मुक्ति प्राप्त करना मोक्ष के लिए आवश्यक होता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए वीतरागता



एक कसौटी है। सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए दर्शन मोहनीय का विलय आवश्यक है, साथ में अनन्तानुबंधी कषाय का विलय भी आवश्यक है। अनन्तानुबंधी चारित्र मोहनीय का ही अंग है। प्रश्न होता है कि दर्शन मोहनीय के साथ चारित्र मोहनीय की बात कैसे आयी? केवलज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय तो जरूरी है, पर वीतरागता क्यों जरूरी है? मोहनीय कर्म का क्षय होगा, तभी ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होगा, यह सहज नियम है।

केवलज्ञान का सीधा सम्बन्ध मोहनीय कर्म से नहीं है पर उसकी प्राप्ति के लिए मोहनीय कर्म का पहले क्षय होना जरूरी है। उसके बाद ही ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होगा। इसी प्रकार सम्यक्त्व का सीधा सम्बन्ध दर्शन मोहनीय से है तो साथ में अनन्तानुबंधी का विलय होता है, तभी दर्शन मोह के विलय की बात साथ हो सकती है। यह एक सहज प्रकृतितव नियम है। अनन्तानुबंधी का विलय होगा तो ही सम्यक्त्व टिक सकेगा।

लोभ की वृत्ति सामान्य मनुष्यों में होती है। यहां तक की साधु में भी लोभ की चेतना विद्यमान होता है। कहा गया है कि दसवें गुणस्थान तक भी लोभ का अंश रहता ही है। आदमी लोभ को प्रतनु बनाए, इसका प्रयास करना चाहिए। आयारो आगम में एक निर्देश दिया गया है कि मानव अलोभ से, संतोष की साधना से लोभ को जीतें, लोभ को खत्म करें। हमारे भीतर कोरा लोभ ही नहीं है, अलोभ भी हमारे भीतर है। अलोभ की भावना जितनी पुष्ट होती जाएगी, संतोष की अनुप्रेक्षा जितनी पुष्ट होगी, लोभ उतना प्रतनु हो सकता है।

लोभ उदय भाव है, अलोभ क्षयोपशम भाव है, दोनों में संघर्ष चले। अलोभ के धर्म को हम और जागृत करने का प्रयास करें। इसके लिए अनुप्रेक्षा करें। लोभ का प्रतिपक्ष संतोष है। श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत है- इच्छा परिमाण। पदार्थों के उपभोग में सीमा करना और संतोष रखने का प्रयास हो। ज्यादा कमाई के

लिए आदमी को ठगी, चोरी और बेईमानी से बचने का प्रयास करना चाहिए। मानव के जीवन में संतोष रूपी धन का विकास होना चाहिए। गृहस्थ भी अपने जीवन में लोभ को अलोभ से जीतने का प्रयास करें।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने मुनि गजसुकुमाल के जीवन प्रसंगों का सुन्दर रूप में वर्णन किया। पावन प्रवचन व आख्यान के उपरान्त अनेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का आचार्यश्री के श्रीमुख से प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ कन्या मण्डल, सूरत ने चौबीसी के गीत का संगान किया। प्रताप सिंह सिंधी ने अपनी पुस्तक 'सचित्र प्रज्ञावान बनो' आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित की। डॉ. कुसुम लुणिया ने अपनी पुस्तक 'सर्वोत्तम जीवनशैली' को आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया। इस संदर्भ में डॉ. लुणिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# सुरक्षित आत्मा भव भ्रमण से हो जाती है मुक्त : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

19 अगस्त, 2024

आत्मरक्षा का पाठ पढ़ने वाले आचार्य श्री महाश्रमण जी ने रक्षाबन्धन के दिन महावीर समवसरण में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया की आयरो आगम में कहा गया है- आत्मा क्षण भर में मुक्त हो जाती है। जो व्यक्ति संयम में रमण करता है, अरति भाव से दूर रहता है, साधना करते-करते एक क्षण ऐसा आता है कि वह मोह से मुक्त हो जाता है, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्मों से भी मुक्त हो जाता है। आठ कर्मों में सबसे पहले क्षीण होने वाला मोहनीय कर्म होता है। सबसे ज्यादा नुकसानदेह और पापों को लगाने वाला कर्म मोहनीय ही होता है। सबसे पहले विनाश भी इसी का ही होता है। प्रथम चरण में मोह कर्म का, दूसरे चरण में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्म का, तीसरे और जीवन के अंतिम चरण में वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य कर्म, इन चारों कर्मों का क्षय होता है। 14वें गुणस्थान की



समाप्ति पर ये तीनों कार्य हो जाते हैं। मुक्त होने में बहुत कम समय लगता है, एक समय में आत्मा मोक्ष में चली जाती है, सिद्ध शिला में अनंत समय के लिए स्थित हो जाती है।

हर सिद्ध आत्मा सिद्धत्व की प्राप्ति से पहले कभी न कभी मिथ्यात्वी के रूप में रहती है। आज श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन के रूप में प्रतिष्ठित है। लौकिक पर्व में राखी के दिन भाई-बहन का मिलन हो जाता

है। हालांकि यह तो बन्धन है। मुक्ति अच्छी होती है तो कहीं-कहीं बन्धन भी अच्छा होता है। हम इस संकल्प का बोध करें कि हमें हमारी आत्मा की सुरक्षा करनी है, इंद्रियों को वश में रखना है। संयम के द्वारा आत्मा की रक्षा करें। अरक्षित आत्मा संसार में भ्रमण करती है, सुरक्षित आत्मा मुक्त हो जाती है। हमारी आत्मा मोहनीय कर्म से मुक्त हो और अन्य कर्मों से भी मुक्त हो जाए। कन्याओं,

बहनों के संस्कारों की रक्षा हो, भ्रूण हत्या जैसा काम ना हो।

आत्मा की रक्षा, बहनों की रक्षा, संस्कारों की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा, अहिंसा की रक्षा, संयम, ईमानदारी, संस्कारों की रक्षा, शरीर की रक्षा, प्राणियों की रक्षा, मातृभूमि की रक्षा तथा देश के नागरिकों की भी रक्षा हो। स्वयं एवं दूसरों की आत्मा को पापाचरण से बचाएं। आज का दिन संस्कृत दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। संस्कृत भाषा के प्राचीन-अर्वाचीन अनेक ग्रंथ हैं। गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। संस्कृत भाषा का ज्ञान होने से आगम सुबोध हो सकते हैं।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने जनता को उद्बोधित करते हुए फरमाया कि रक्षा बंधन के दिन बहन भाई की कलाई पर राखी बांधती है। भाई बहन की रक्षा करता है। हमें हमारी आत्मा की रक्षा करनी है। सबसे बड़ा शास्त्रज्ञ वह होता है जो उपशम की चेतना को जगा लेता है। (शेष पेज 12 पर)

## अनासक्ति, अपरिग्रह और अमूर्च्छा भाव से मिल सकती है सिद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

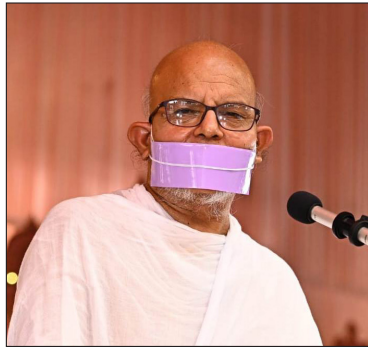
सूरत।

21 अगस्त, 2024

तेरापंथ के सारथी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आयरो आगम में कहा गया है कि कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जिनके मन में यह संकल्प होता है कि हम दीक्षित होंगे, संन्यास लेंगे और अपरिग्रही होंगे। इस संकल्प से वे प्रव्रजित हो जाते हैं परन्तु प्रव्रजित होने के बाद भी वे पदार्थों में, परिग्रह में उलझ जाते हैं।

परिग्रह के दो भाग हो जाते हैं- एक तो मूर्च्छा परिग्रह, भीतर का मोह, आसक्ति। इससे साधु को मुक्त रहना चाहिये। दूसरा है- बाह्य परिग्रह। बाह्य परिग्रह आभ्यंतर परिग्रह का निमित्त बन सकता है। साधु अपने जीवन में बाह्य और आभ्यांतर दोनों प्रकार परिग्रहों से बचने का प्रयास करना चाहिए। आवश्यक चीजों को साथ रखा जा सकता है, किन्तु साधु को अनावश्यक पदार्थों का संग्रह नहीं करना चाहिए।

साधु के लिए सुन्दर शब्द है- 'अप्पोवहि'। साधु को अल्पोपधि वाला होना चाहिये। अन्यथा प्रतिलेखन बढ़ जायेगा। ज्यादा चीजें रहने से वहां जीव-जन्तुओं का समावेश हो सकता है, जीवों की विराधना हो सकती है। हिंसा और परिग्रह दोनों दृष्टि से अल्पोपधि होना साधु के लिए हितकर हो सकता है।



भरपूर परिग्रह में भरत चक्रवर्ती की तरह अनासक्ति का भाव आ जाये। आसक्ति आने से साधना में बाधा उपस्थित हो सकती है।

साधना में निर्मलता रहे, अनासक्ति की भावना रहे। जब तक परिग्रह रहेगा, साधना में सिद्धि नहीं मिलेगी। अनासक्ति, अपरिग्रह और अमूर्च्छा भाव से सिद्धि मिल सकती है। लब्धियां अनेक हो सकती हैं, पर वीतरागता से बड़ी लब्धि कोई नहीं है। साधु लुक-छिपकर भी परिग्रह न रखे, यह तो एक तरह की माया हो जाती है।

गृहस्थ से साधु कितना ऊंचा हो जाता है, कारण कि साधु के महाव्रतों की साधना है। अपरिग्रह की साधना उच्चपद की साधना है। अपरिग्रह की साधना करने वाला संयम की अच्छी साधना कर सकता है। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने गजसुकुमाल मुनि के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया।

(शेष पेज 12 पर)

## साधुपन गंवाना है इन्द्र का इन्द्रत्व समाप्त होने के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

20 अगस्त, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी का रसास्वाद करते हुए फरमाया कि आयरो आगम में बताया गया है- कई भव्य आत्माएं संयम जीवन को स्वीकार कर दीक्षित हो जाती हैं। कई चारित्र आत्माएं साधुपन छोड़कर गृहस्थ में चली जाती हैं। वापस घर में जाने के दो कारण हैं- मति मंदता और मोह का आवरण।

जो मन्द होते हैं, उनका चिन्तन गहरा नहीं होता है। बाह्य प्रभाव देखकर चिन्तन आता है कि मैं साधु क्यों बना? गृहस्थ कितने सुखी हैं। दसवें आलियं आगम में बताया गया कि जिस साधु का मन विचलित होने लगे उसे उस आगम में उल्लेखित 18 बातें पढ़नी चाहिये कि गृहस्थ का जीवन कैसा है? इन 18 बातों को पढ़ने से, चिन्तन करने से वापस उनका मन साधुपन में जम सकता है। दूसरा कारण है कि आदमी चिन्तनशील है, पर मोह के प्रभाव से गार्हस्थ्य में चला जाता है, साधुपन को छोड़ देता है। तपते सूर्य के सामने बादल आ जाये तो सूर्य की तेजस्विता मन्द पड़ जाती है। मोह के प्रभाव से हमारे चिन्तन पर आवरण आ



सकता है। इसी तरह मन्दता और ऊपर से मोह का आवरण आ गया तो साधु घर जाने को उद्यत हो जाते हैं। कई तो घर चले जाते हैं, पर बाद में वे कई पश्चाताप भी करते हैं कि मैं श्रामण्य में रहता तो कितना अच्छा होता। अनेक साधु हमारे धर्मसंघ में हुए हैं, जो दीक्षित हुए, घर चले गये और फिर वापस दीक्षित हो गये।

साधुपन पाने के लिए बड़ा भाग्य चाहिये, तभी वह अंत समय तक साधना कर सकता है। भगवान महावीर ने भी गिरते हुए मुनि मेघ कुमार को संभालकर संयम में स्थिर कर दिया। गिरते समय संभाल लेने से व्यक्ति डूबने से बच सकता है, साधुपन में सुस्थिर हो सकता है। मन्दता और मोह के प्रभाव से व्यक्ति दलदल में फंस सकता है। साधुपन छोड़ गृहस्थ में रहने से दयनीय स्थिति

हो सकती है, बाद में वह पश्चाताप करता है। साधुपन का संयम का हीरा जिसे प्राप्त होता है और उसे वह गंवा देता है तो वह ऐसी स्थिति होती है जैसे किसी इन्द्र का इन्द्रत्व समाप्त हो जाये। जिन्दगी भर अन्त समय तक अच्छी तरह साधुपन पल जाये तो वह बड़ा भाग्यशाली होता है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने 'चन्दन की चुटकी भली' पुस्तक से आख्यान का वाचन किया। मुनि उदितकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए। तदुपरान्त तेरापंथ किशोर मण्डल-सूरत के सदस्यों ने चौबीसी के सातवें सुपाशर्व स्तवन का संगान किया। पूज्यवर ने छोटी-बड़ी तपस्या करने वाले तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने किया।



# मासखमण तपोभिन्दन समारोह में तपस्याओं का प्रत्याख्यान

## शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में छोटी खाटू निवासी विश्वास नगर, दिल्ली प्रवासी राजेश भंडारी ने 31 के तप का प्रत्याख्यान किया। दूसरे तपस्वी बीदासर निवासी विवेक विहार, दिल्ली प्रवासी हनुमान बाँठिया ने 15 का प्रत्याख्यान किया।

साध्वी संगीतश्री जी ने तप का महत्त्व समझाते हुए तेरापंथ इतिहास में प्रख्यात पांच तपस्वी संत अ.भि.रा.शि.को. के जीवन के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि हमें भी उनके

जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को तपस्या करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए अनुमोदना में गीत का संगान किया। साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी, साध्वी मुदिताश्री जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से तपस्वियों की अनुमोदना की। शाहदरा सभा उपाध्यक्ष महावीर दुगड़ ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन कर अनुमोदना व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभाध्यक्ष

राजेंद्र सिंघी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बैंगानी, छोटी खाटू परिषद से गौतम डूंगरवाल, विमला देवी भंडारी, भंडारी परिवार की बहनों, सेठिया परिवार की बहनों आदि ने अपने भावों व गीतिका के माध्यम से अनुमोदना की। ममता पगारिया धर्मपत्नी राजेश पगारिया आयम्बिल का मासखमण करके आगे बढ़ रही हैं।

पड़िहारा निवासी गौहाटी प्रवासी अंजू धर्मपत्नी अशोक सुराना ने एकासन का मासखमण किया। मंत्री सुरेश भंसाली ने तपस्वियों का परिचय देते हुए कार्यक्रम का संचालन किया।

# तंत्र-मंत्र-यंत्र प्राण शक्ति को बढ़ाता है

## दक्षिण (मुंबई)।

‘जैन वांगमय दिव्य ज्योतिष कार्यशाला - जैन आगमों में तंत्र-मंत्र-यंत्र’ कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से मुनि कुलदीपकुमार जी ने किया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया द्वारा हुआ।

मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा जैन परंपरा में ज्योतिष और वास्तु पर बहुत विस्तार पूर्वक लिखा गया है। जो विधि-पूर्वक यंत्र-मंत्र-तंत्र को कार्य में लेता है वो विशेष लाभान्वित हो सकता है। मुनि मुकुलकुमार जी ने कहा जीवन में होने वाली गलतियों को सुधार कर शुभ भविष्य का निर्माण करने वाली विद्या का नाम है ज्योतिष। मंत्र प्राण शक्ति को बढ़ाता है, सिद्धि देता है, संकल्प को

मजबूत करता है, मंत्र दूषित प्रकल्पनों को नष्ट करता है।

यंत्र का अर्थ है कि एक निश्चित सीमा में रक्षा करने एवं इच्छाओं को पूर्ण करने वाला। तंत्र का अर्थ है संपूर्ण जागरण और अक्षय सुख। मुनि मुकुलकुमार जी ने जैन शास्त्र के प्राचीनतम दुर्लभतम मंत्र, तंत्र एवं यंत्र, वास्तु विज्ञान आदि की जानकारी प्रदान कर श्रोताओं का पथ प्रदर्शन किया।

सकल जैन समाज से पदाधिकारी गण एवं स्थानीय सभा संस्थाओं के पदाधिकारी गण एवं श्रावक समाज अनेकों उपनगरीय क्षेत्रों से भाई बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, कार्याध्यक्ष

गणपतलाल डागलिया, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल आदि संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा।

कार्यक्रम के संयोजक गणपतलाल डागलिया, सह संयोजक देवेन्द्र डागलिया, नितेश धाकड़, रौनक धाकड़, पुष्पा कच्छारा, कार्यक्रम प्रयोजक श्रद्धा की प्रतिमूर्ति पुष्पा देवी मनोहरलाल, अशोक कुमार वागरेचा, प्रभावेन प्रभुलाल मेहता, मनोहर लाल डागा आदि का विशेष सहयोग रहा।

आभार ज्ञापन युवक परिषद अध्यक्ष गिरीशि सिसोदिया ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

# सामंजस्य के लिए विनम्रता का होना जरूरी होता है

## कोयम्बतूर।

मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में रिशतों की डोर, न हो कमजोर विषयक कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोयम्बतूर द्वारा किया गया।

मुनि दीपकुमार जी ने कहा सांसारिक दुनिया संबंधों की दुनिया है, वहां रिशतों में मधुरता रहे, रिशतों की डोर कमजोर न हो, उसे प्रेम की डोरी से बांधे रखना जरूरी है। परिवार की ताकत प्रेम है। परिवार के प्रति आप जिम्मेवारी

निभाते रहेंगे तो परिवार भी आपके प्रति जिम्मेवारी निभाता रहेगा। जरूरत है आपको अपना हाथ आगे बढ़ाने की।

परिवार में जहाँ सास-बहू प्रेम से रहते हैं, भाई-भाई हिल मिलकर रहते हैं, बड़े बुजुर्गों का सम्मान करते हैं, देवरानी जेतानी बहनों जैसी रहती है, वह घर धरती का मानो जीता जागता स्वर्ग है।

मुनिश्री ने आगे कहा घर का हर सदस्य संकल्प ले किसी का दिल नहीं दुखाएगा। बच्चों में अच्छे संस्कार अवश्य दें। बच्चों में अच्छे संस्कार से ही परिवार का भविष्य बनेगा। मुनि काव्यकुमार जी

ने कहा- परिवार में सामंजस्य स्थापित करना बहुत बड़ी कला है।

सामंजस्य के लिए विनम्रता का होना जरूरी होता है। अहंकार हर बात में आड़े आ जाता है। अहंकार के कारण विवाद पैदा होते हैं। जिस घर रूपी मंदिर में संस्कारों के दिए जलते हैं, उस परिवार रूपी मंदिर में हमेशा खुशहाली का आलोक रहता है।

इस अवसर पर स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम मुनिश्री के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

# ‘एक था वो संत’- वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

## सूरत।

तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा ‘एक था वो संत’ शीर्षक से वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन गादिया ने अपने वक्तव्य से किशोरों में नया जोश भरा, वहीं सह-संयोजक गौतम जैन ने सभी का स्वागत किया। मुनि योगेश कुमार जी ने भिक्षु स्वामी के जीवन पर आधारित गीतों की पंक्तियों के माध्यम से उनके जीवन और आदर्शों को समझाया। मुनिश्री ने किशोरों को उनके करियर के साथ-साथ वीतराग पथ को अपने जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बनाने का भी आग्रह किया। मुनि ध्रुव कुमार जी ने विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए किशोरों को आत्मिक विकास के महत्त्व को समझाया।

कार्यक्रम के अगले सत्र ‘BRAINATHON’ में किशोरों ने अपनी बुद्धि और समझ का परिचय देते हुए विभिन्न विषयों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर दिए। सत्र के अंत में संयोजक सुजल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि सत्यकुमार जी का संबोधन भी प्राप्त हुआ। इस सत्र का संचालन शिखर बाबेल, मुदित आंचलिया, अहम

चपलोट, और कल्प मेड़तवाल ने किया। सत्र ‘ACTZAP’ में किशोरों ने भिक्षु स्वामी के दृष्टांतों को छोटे-छोटे नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस सत्र में सूरत, अहमदाबाद, उधना, और बारडोली के किशोर मंडलों ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान अहमदाबाद और द्वितीय स्थान सूरत को प्राप्त हुआ। सत्र ‘SANTROHAN’ में मुनि सिद्ध कुमार जी ने वैराग्य और आध्यात्मिक विकास के सिद्धांतों पर आधारित एक अंतर्दृष्टिपूर्ण यात्रा कराई। उन्होंने किशोरों को आंतरिक शांति और मुक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र ‘PARCHE PE CHARCHA’ में, किशोरों ने तेरापंथ के विभिन्न दृष्टांतों पर चर्चा की और उन्हें गहराई से समझा। इस सत्र का संचालन ब्लू ब्रिगेड के सौम्य मेड़तवाल ने किया। इस आयोजन के प्रबंधन में प्रभारी जय जीरावाला, सह-संयोजक ऋषभ जैन और वीर मेहता ने विशेष योगदान दिया। कार्यक्रम में ब्लू ब्रिगेड के सदस्य जिनेश सिपानी, कुशल जैन और मुदित शाह की भी विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सह प्रभारी भव्य बोथरा द्वारा किया गया।

# तेरापंथ प्रीमियर लीग से मिली आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा

## विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन विजयनगर में साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ प्रीमियर लीग का आयोजन किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल ने निश्चित प्रश्नों पर आधारित ज्ञान वर्धक प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने स्वाध्याय करने से निर्जरा के महत्त्व को बताते हुए आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा दी। इस प्रतियोगिता में ज्ञान, दर्शन, चरित्र और

तप नाम की टीमों ने भाग लिया। क्रिकेट मैच की शब्दावली और नोक आउट आधारित प्रारूप में सेमीफाइनल और फाइनल मैच का आयोजन किया गया। फाइनल मैच में दर्शन और चरित्र टीम ने जगह बनाई और चरित्र टीम ने सर्वाधिक अंक (रन) अर्जित करते हुए TPL पर अपनी पकड़ बनाई। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष विकास बाँठिया और टीकेएम सह संयोजक रिशित छाजेड़ ने किया। किशोर मंडल संयोजक हर्ष मांडोट, सह संयोजक दर्शन बाबेल का अथक श्रम रहा।



तेरापंथ टाइम्स/युवादृष्टि/इंजिनियस युवा की प्रति प्राप्त करने के लिए स्कैन करें।



## संक्षिप्त खबर

### दंपति कार्यशाला का आयोजन

सोदंती, कर्नाटक। साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ भवन में दंपति कार्यशाला आयोजन किया गया। साध्वी सोमयशाजी ने उपस्थित दम्पतियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि- भारतीय संस्कृति में संबंधों की पवित्रता अनादिकाल से रही है, परंतु वर्तमान भौतिक युग में दम्पति के त्याग व समर्पण के जीवन में कमी आ रही है। पति-पत्नी दोनों की उपेक्षा नहीं अपेक्षा समझे। रहना सीखें, सहना सीखें तो हर समस्या समाहित हो सकती है। डॉ. साध्वी सरलप्रभाजी ने कहा कि रिश्ते बनाना आसान होता है पर रिश्तों को निभाना बहुत मुश्किल होता है। परिवार का अहम् रिश्ता होता है पति-पत्नी का, अगर पति पतंग बन जाए तो पत्नी उसकी डोर बन जाए। एक-दूसरे को सहन करने की आदत डालें। कार्यशाला में तेरापंथी एवं जैन समाज के लगभग 25 दंपति तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जगदीश कोठारी ने आभार प्रकट किया।

### संगठन यात्रा का आयोजन

कोयंबटूर। अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य एवं तमिलनाडु केरल प्रभारी माला कातरेला एवं अनीता बरडिया संगठन यात्रा हेतु कोयंबटूर पधारे। मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का सुमधुर संगान किया गया। अनीता बरडिया ने साध्वी प्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया। स्थानीय उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा का संदेश वाचन किया। स्थानीय अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत व अभिवादन किया। ज्योति सुराणा एवं रुचिका बैद ने आगंतुकों का परिचय दिया। माला कातरेला एवं अनीता बरडिया ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चारों स्थाई योजनाओं के बारे में, स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अंतर्गत 7 सूत्रों, समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत कैंसर जागरूकता अभियान के विषय पर जानकारी दी। इसके बाद जिज्ञासा एवं समाधान का सत्र रखा गया। कोयंबटूर महिला मंडल के द्वारा तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत सहयोग राशि प्रदान की गई। धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय मंत्री सुमन सुराणा ने दिया। इस कार्यक्रम का कुशल संचालन मीनू बोथरा ने किया।

### तप में कर जप का प्रयोग

जोरावरपुरा। 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में तपस्वी भाई ईश्वरचंद्र छाजेड़, ऋषि छाजेड़ व सोनम बैद का तप अनुमोदन कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से ममता पारख ने की। साध्वीश्री ने भगवान ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक की तपस्याओं के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा शरीर औदारिक है, जब तक अंतराय कर्म का क्षयोपशम नहीं होगा, तपस्या नहीं होगी। जैन धर्म त्याग और तपस्या की खान है। सभी चरित्र आत्माओं द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वी रोहितप्रभा जी ने बताया कि तपस्या से हमारे कर्म झड़ जाते हैं। तपस्या के समय हमारे अंदर निर्जरा के अतिरिक्त और कोई भाव नहीं होना चाहिए। परिवार की बहनों द्वारा तप अनुमोदन की गई। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा व जीवराज मरोठी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन प्रेम बुच्चा ने किया।

### स्कूल के बच्चों में निःशुल्क बांटी नोट बुक्स

राजराजेश्वरी नगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए कास्यपुरा गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल रामनगर में पढ़ रहे बच्चों को हनुमानमल, संजय कुमार, मनोज कुमार बैद परिवार नोखा बंगलुरु के सहयोग से नोट बुक्स का वितरण करवाया। परिषद् अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। स्कूल प्राध्यापक ने उनकी जरूरत पर उन्हें बुक्स उपलब्ध करवाने के लिए तेषुप आर आर नगर का धन्यवाद किया।

## 'महिमा जन्मदाता की' कार्यशाला में जाना मां-पिता के रिश्ते का महत्व

### कोयंबटूर।

मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में 'महिमा जन्मदाता की' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा कोयंबटूर द्वारा किया गया।

मुनि श्री ने कहा- माता-पिता का रिश्ता दुनिया का सबसे बड़ा रिश्ता होता है क्योंकि वह रिश्ता जन्म से नौ माह पहले ही शुरू हो जाता है। वे लोग किस्मत वाले होते हैं, जिनके सिर पर मां-बाप का साया होता है। याद रखें माता-पिता बूढ़े पेड़ की तरह होते हैं,

जो फल भले न दें पर छाया जरूर देते हैं। कहते हैं संसार में पृथ्वी बहुत विराट है, आकाश बहुत विशाल है और ब्रह्माण्ड अन्तहीन है, किन्तु मां-बाप की विशालता इससे भी अधिक है।

मां विश्वभर की लाखों शब्द संपदा वाले शब्द भण्डार का सबसे छोटा किंतु अपने आप में परिपूर्ण वात्सल्य भावना से सिक्त रहस्यगर्भित शब्द है। माता-पिता की सबसे असली पहचान बच्चे ही होते हैं। बच्चों में उनके संस्कार सहज प्रतिबिम्बित होते हैं। बच्चे नागरिकता का पहला पाठ मां के स्नेह और पिता के

संरक्षण में ही सीखते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा- वर्तमान परिवेश में माता-पिता अपने मूल स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। बच्चों को समय, संस्कार, संरक्षण नहीं दे पा रहे हैं, बहुत बड़ी विडम्बना दिखाई दे रही है।

इस अवसर पर मुनिश्री ने सामूहिक एकासन के प्रत्याख्यान कराए। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा- मां-पिता के सिवाय अपना कोई नहीं होता। अपने मां-बाप पर इतना विश्वास करो, जितना दवाइयों पर करते हो। वह भले ही कड़वी होगी पर फायदेमंद होगी।

## स्वरविज्ञान से होता है अनेक समस्याओं का समाधान

### कादिवली, मुंबई।

तेरापंथ भवन कादिवली में साध्वी डॉ. मंगल प्रज्ञा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ युवक परिषद् कादिवली और मलाड के तत्वावधान में स्वर विज्ञान कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर उपस्थित धर्मपरिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- स्वरविज्ञान जैन परम्परा का प्राचीन महत्वपूर्ण उपक्रम है। यह साधना प्राणशक्ति की साधना है। स्वरविज्ञान की साधना करना व्यक्ति पर निर्भर है। यह एक ऐसी साधना है, जिसका सम्यक् ज्ञान हो तो अनेक समस्याओं से निजात पा सकते हैं। हठयोग की भाषा में चंद्र

स्वर को ईड़ा, सूर्यस्वर को पिंगला और दोनों स्वर की संयुक्ति को सुषुम्ना कहा जाता है। तिथि, वार और दिशा के साथ स्वरों का सही नियोजन करके करनीय और अकरणीय कार्य का निर्णय किया जा सकता है।

सोमवार, बुधवार और शुक्रवार- ये तीनों चन्द्र स्वर से संबंधित हैं, जबकि मंगलवार, शनिवार और रविवार- ये तीनों सूर्यस्वर से जुड़े हैं। गुरुवार सब के साथ जुड़ा है, जिसका गुरु प्रबल होता है वहां समस्याएं हावी नहीं होती। साध्वी डॉ. मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- व्यक्ति कोई भी कार्य करता है, वह सफल होना चाहता है, इसके लिए स्वरों का ज्ञान आवश्यक है। किसी भी कार्य के स्थायित्व के

लिए चन्द्र स्वर का होना आवश्यक है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश - इन पांच तत्वों के साथ भी स्वर संयोजन किया जाता है। किसी कार्य को इच्छानुसार सम्पादित करने के लिए स्वरों को बदला भी जा सकता है। गर्मी के समय चन्द्रस्वर की साधना करने से और सर्दी में सूर्यस्वर की साधना करने से अत्यधिक सर्दी या गर्मी का अहसास नहीं होता। भोजन करते समय सूर्य स्वर चले तो पाचन सही होता है। स्वस्थता के लिए स्वरों का संतुलन आवश्यक है।

साध्वीवृंद ने 'अद्भूत स्वर विज्ञान का ज्ञान' गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाया।

## संदेह व्यक्ति को खोखला बना देता है

### चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी श्री डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में 'शंका - स्तो पोइजन का डंका' कार्यशाला का आयोजन जैन तेरापंथ नगर, माधावरम् के तीर्थंकर समवसरण में हुआ।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने कहा कि शंका, संशय, सन्देह सभी पर्यायवाची शब्द हैं। शंका तत्व के प्रति, साधना के प्रति, मंत्र जाप, परिवार, समाज के प्रति

भी हो सकती है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया कि संशयात्मा विनश्यति। संशयशील आदमी की आत्मा नष्ट हो जाती है। रात को सोता हुआ मन में शंका करें छत गिर गई तो, बाहर बाइक में जाये और मन में आये एकसीडेंट हो जाये तो? यों दिमाग में शंका बनाये रखने से जीना भी मुश्किल हो जाता है। यह संदेह धीरे-धीरे जहर का काम कर लेती है, अंदर से व्यक्ति को खोखला बना देती है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि जहर को अमृत में बदलना है

तो छोटी-छोटी बातों में न उलझे, उन्हें अपनी विचारों की गंदगी का माध्यम न बनाये। सम्यक्त्व के पांच दूषण बताये गये हैं, उनमें प्रथम है- शंका। सम्यक्त्व को मिथ्यात्व में बदलने में सबसे बड़ा कारण भी शंका है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सज्जनबाई रांका ने 33 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। ट्रस्ट बोर्ड द्वारा तपस्वी का अभिनन्दन किया गया।

## हर दंपति को एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए

रायपुर।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, रायपुर द्वारा पटवा भवन में 'तुम्हारे लिए' विषयक दंपति कार्यशाला का आयोजन किया। मुनिश्री ने विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए कहा स्वस्थ परिवार ही स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का आधार है। उसके लिए पति-पत्नी के रिश्ते में आपसी पवित्रता एवं सुदृढ़ता जरूरी है। दांपत्य जीवन में टकराव के मुख्य पांच कारण हैं-असंयम, आवेश, अभिमान, असंतुलन एवं अविवेक।

रिश्तों को मधुर बनाने के लिए संकीर्णता की भावना को त्याग कर

विवेक चेतना को जागृत रखना चाहिए। मुनिश्री ने युवा दंपतियों को अध्यात्म और संयम के छोटे-छोटे प्रयोग करने की प्रेरणा दी। आयोजित समारोह में मुनिश्री ने आगे कहा आज बिखरते परिवार और चिटकते रिश्तों से सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा है। रिश्तों की डोर को सुदृढ़ बनाने के लिए हर दंपति को एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए। मुनि सुधाकर जी ने सप्तवचन, अन्न, बल, धन, दुख, परिवार, मित्रता एवं एकांतचर्या की सुंदर व्याख्या की। मुनि नरेशकुमार जी ने गीतिका का संगान किया।

इस अवसर पर अनीता नाहर ने 24, पायल नाहर ने 23, जय कुमार जैन ने

24, धृति दुग्गड ने 24, कमल ललवानी ने 17, प्रकाश चंद बाफना ने 16 और राखी गोलछा ने 10 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। रायपुर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष तरुण नाहर ने अपने वक्तव्य में सभी धर्म प्रेमी श्रद्धालुओं का स्वागत किया एवं कार्यशाला की रूपरेखा के बारे में अधिक जानकारी दी। कार्यशाला के प्रायोजक बी.एल. जैन, राहुल जैन, विक्रम जैन, एवं विपुल जैन का सम्मान किया गया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, रायपुर की टीम ने सुंदर मंगलाचरण गीतिका की प्रस्तुति दी। प्रोग्राम का कुशल संचालन एवं आभार रायपुर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सचिव अरुण सिपानी ने किया।

## जीत के गीत - दायित्व बोध कार्यशाला

कांटाबांजी।

अभातेयुप के तत्वावधान में ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ स्तरीय दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद कांटाबांजी द्वारा समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षान्तिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यशाला अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में हुई। कार्यशाला का प्रारंभ समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ हुआ। तेयुप कांटाबांजी के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया एवं कार्यशाला उद्घाटन की घोषणा की गई। तेयुप अध्यक्ष बिकाश जैन द्वारा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में स्थानीय सभा अध्यक्ष युवराज जैन, स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष आशा जैन, शाखा

प्रभारी गौतम जैन एवं प्रांतीय सभा अध्यक्ष मनोज जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने वक्तव्य में सेवा, संस्कार, संगठन के अन्तर्गत सभी कार्यक्रमों को सम्पादित करने के लिए प्रेरित किया। समणी क्षान्तिप्रज्ञा जी ने युवा पीढ़ी को धर्म संघ और संघपति के प्रति सच्ची निष्ठा और समर्पण भाव से समर्पित हो कर धर्मसंघ की सेवा करने की प्रेरणा दी। प्रथम सत्र का आभार ज्ञापन तेयुप कोषाध्यक्ष गौरव जैन ने किया। द्वितीय सत्र में अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी ने युवकों में जोश भरते हुए कहा कि असफलता से ना डरें, अज्ञात में छलांग जरूर लगाएं। खुद पर भरोसा रखें, गुरुकृपा से सब कार्य सफल होते हैं। राष्ट्रीय महामंत्री अमित नाहटा ने तेयुप के व्यस्थित संचालन एवं अध्यक्ष-मंत्री के दायित्व के बारे में बताते हुए तेयुप के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी। उनका संचालन करने और तेयुप को

हर कार्य पूरी प्रमाणिकता और सजगता के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। समणी जिनप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में युवा शक्ति को संगठित होकर कार्य करने और नशा मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। तीसरे सत्र में मोटिवेशनल स्पीकर धनंजय बांठिया ने मनी मैनेजमेंट विषय पर विस्तृत जानकारी दी। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा सभी के जिज्ञासा और समाधान का भी सत्र रखा गया। कार्यशाला के प्रायोजक गोपालदास जैन, विकाश जैन, शंकर प्रसाद जैन, गौतम जैन का सम्मान किया गया। दायित्व बोध कार्यशाला में सहभागिता हेतु ओडिशा, छत्तीसगढ़ और विशाखापट्टनम के विभिन्न क्षेत्रों की 18 परिषदों से लगभग 150 की संख्या में युवा शक्ति उपस्थित थी। कार्यशाला में संयोजक नवनीत जैन, गौरव जैन, अमित जैन और हेमंत जैन का सराहनीय श्रम रहा। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री यश जैन एवं मंच संचालन सुमित जैन ने किया।

## जैन ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र कार्यशाला का आयोजन

माधावरम, चेन्नई।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में जैन तेरापंथ नगर के तीर्थंकर समवसरण में जैन ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र की कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी श्री ने कहा- जैन ग्रंथ एवं अन्य ग्रंथों में भी सूर्य, चंद्र, पृथ्वी और नक्षत्र की स्थिति, दूरी और गति का वर्णन किया गया है। चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति आगम में भी सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र आदि का विवरण विस्तार से किया

गया है। स्थिति, दूरी और गति के मान से ही पृथ्वी पर होने वाले दिन-रात और अन्य संधिकाल को विभाजित कर एक पूर्ण सटीक पंचांग बनाया गया है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आकाश के तारामंडल के विभिन्न रूपों में दिखाई देने वाले आकार को नक्षत्र कहते हैं। वैदिक ज्योतिष में 27 नक्षत्रों का उल्लेख आता है किन्तु जैनधर्म में एक अभिजीत नक्षत्र को भी स्थान दिया गया है। प्रमुख वक्ता संतोष दूगड़ ने कहा- पूरा ब्रह्माण्ड जैसे पांच

तत्वों से निर्मित है वैसे ही हमारे भीतर का ब्रह्माण्ड भी पांच तत्वों से निर्मित है। साध्वी मेरुप्रभा जी और साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। माधावरम ट्रस्ट अध्यक्ष धीसुलाल बोहरा, रमेश परमार, अनिलसेठिया, सुरेश रांका, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा, निर्मल सेठिया, सीपी छल्लानी ने मुख्य वक्ता का मोमेंटों से सम्मान किया। मुख्य वक्ता का परिचय प्रवीण सुराणा एवं आभार ज्ञापन ट्रस्ट के मंत्री पुखराज चोरडिया ने दिया।

## तप समाचार

नोहर। स्थानीय तेरापंथ भवन में मुनि अमृतकुमार जी के सान्निध्य में नीरू छाजेड़ ने आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

राजसमन्द। साध्वी लब्धियशाजी के सान्निध्य में विजयादेवी अशोक डूंगरवाल ने ग्यारह की एवं भूपेश धोका ने नौ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

मंडिया। साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में आशा पोकरना मैसूर ने 11 की तपस्या के प्रत्याख्यान किया।

## संक्षिप्त खबर

## स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में रियायती दर पर लिपिड एवं थाइरोइड प्रोफाइल टेस्ट शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर से कुल 123 सदस्य लाभान्वित हुए।

स्व. सुखराज हिंगड की पुण्यस्मृति में नवीन ऋषभ हिंगड परिवार ने अर्थ विसर्जन कर शिविर आयोजन करने में अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में तेयुप पूर्व अध्यक्ष अरविंद गन्ना, अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, राजेश देरासरिया, मुकेश भंडारी, जयंतीलाल गांधी एवं विनोद कोठारी का विशेष सहयोग रहा।

## रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ। अभातेयुप निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन लिलुआ तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। उपासक एवं संस्कारक अरुण नाहटा और संस्कारक मनीष डागा ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। लिलुआ सभा के अध्यक्ष अनिल जैन, तेयुप अध्यक्ष अमित बांठिया, तेरापंथ महिला मंडल, लिलुआ की अध्यक्ष सुशीला देवी छाजेड़, पदाधिकारी एवं किशोर मंडल सहित अनेकों भाई-बहनों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई। तेयुप लिलुआ की ओर से मंत्री जयंत घोड़ावत ने संस्कारकों और महिला मंडल का आभार ज्ञापन किया। महिला मंडल ने भी यथासंभव जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन पर्व मनाने का समर्थन किया।

## दिशाएं भी बदल सकती हैं जीवन की दिशा

रायपुर। आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में भगवती सूत्र पर आधारित दिशाओं के लोकपाल विषय पर भव्य कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा रायपुर के तत्वाधान किया गया। मुनि सुधाकरजी ने भगवती एवं ठाणं सूत्र में वर्णित पूर्व दिशा के सोमपाल, उत्तर दिशा के वैश्रमण, पश्चिम दिशा के वरुण लोकपाल, दक्षिण दिशा के यम लोकपाल के बारे में विस्तार से बताते हुए उनके कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दिशाएं जीवन की दिशा बदल सकती हैं। मुनि नरेश कुमार जी ने गीत का संगान किया।

## हर घर टीटीएफ ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर। अभातेयुप निर्देशित हर घर टीटीएफ ऑनलाइन जूम कार्यशाला आयोजित की गई। जूम कार्यशाला की शुरुआत में तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सबका स्वागत करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की। अभातेयुप टीटीएफ टीम से जय चौरडिया ने सरल शब्दों में अग्नि, बाढ़, रक्त श्राव, दुर्घटना में हड्डी टूटने पर मरीज को फर्स्ट एड देना, मरीज को उठाने और स्ट्रेचर बनाने के उपाय आदि विषयों पर कार्यशाला का रोचक रूप से प्रस्तुत किया। कार्यशाला के अंत में उपाध्यक्ष विकास बांठिया, सह मंत्री पवन बैद, निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने अपनी बात रखी।



## संक्षिप्त खबर

### स्परिचुअल हेल्थ एवं फिजिकल हेल्थ कार्यशाला का आयोजन

मदुरै। अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, मदुरै ने कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम के अंतर्गत स्परिचुअल हेल्थ एवं फिजिकल हेल्थ की कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से किया गया। अध्यक्ष लता कोठारी ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता दीपिका नाहटा ने प्रेक्षा ध्यान के अनेक बिंदुओं पर संक्षिप्त में जानकारी देते हुए प्रयोग करवाये। बबिता गिड़िया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

### संस्कार शाला का आयोजन

टिटलागढ़। समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल टिटलागढ़ तीसरे चरण के संस्कार शाला के आयोजन हेतु शासकीय उच्च बालिका विद्यालय पहुंची। महाप्राण ध्वनि के प्रयोग एवं योगासन के पश्चात कोषाध्यक्ष पूजा जैन ने संस्कारशाला के विषय अनुशासन पर बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा की जीवन में अनुशासन बहुत जरूरी है। यदि हम समय की कीमत समझेंगे, नियमों का पालन करेंगे तो उच्च चरित्र का निर्माण एवं जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पूजा जैन ने कविता एवं कहानी के माध्यम से भी बच्चों को समझाने का प्रयास किया। तत्पश्चात देशभक्ति गीतों पर दो चरणों में प्रतियोगिता कराई गई। इस प्रतियोगिता में 17 बच्चों ने भाग लिया।

### संगठन यात्रा का आयोजन

शिवकाशी। अभातेमम की केरल एवं तमिलनाडु प्रभारी माला कातरेला एवं अनीता बरडिया संगठन यात्रा के अंतर्गत शिवकाशी पहुंची। महिला मंडल की बहनों ने मिलकर कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से की। अनीता बरडिया ने साध्वी प्रमुखाश्री का संदेश वाचन किया। शिवकाशी महिला मंडल की पूर्व मंत्री सुप्रिया सेठिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा का संदेश वाचन किया। अध्यक्ष रानी बरडिया ने दोनों बहनों का स्वागत किया व उनका परिचय दिया। माला कातरेला ने 7 संस्कारों द्वारा परिवार का निर्माण, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूकता से राष्ट्र का निर्माण और महिला मंडल की चार योजनाओं द्वारा मंडल का विकास करने की प्रेरणा दी। अनीता बरडिया ने कैंसर के प्रति जागरूकता एवं मंडल में समर्पण भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। महिला मंडल ने भावना चौके व तुलसी विकास परियोजना में सहयोग राशि प्रदान की। शिवकाशी महिला मंडल की गति प्रगति का विवरण व नारी लोक में आए हुए करणीय कार्य का रजिस्टर मंत्री बेला कोठारी ने प्रस्तुत किया।

### रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर। अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में किया गया। परिषद् के जैन संस्कारक जितेंद्र घोषल, विक्रम दूगड़, अमित भंडारी, आदित्य मांडोत ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम को संपादित किया। तेरापंथ युवक परिषद्, बंगलुरु से अध्यक्ष विमल धारीवाल, उपाध्यक्ष मनीष भंसाली, मंत्री राकेश चौरडिया, सहमंत्री प्रतीक जोगड़, सदस्य विकास चौरडिया, किशोर मंडल से विनीत घोषल ने अपनी सहभागिता दी। विक्रम दूगड़ ने जैन संस्कार विधि के प्रचार प्रसार हेतु सबको प्रेरणा दी। कार्यशाला में लगभग 26 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन साध्वी उदितयशा जी के मंगल पाठ से हुआ।

# माता-पिता केवल जन्म ही नहीं, अच्छा जीवन भी देते हैं

## साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा प्रेक्षा विहार में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 6 से 19 वर्ष के कुल 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें कनिष्ठ वर्ग और टीनएजर्स वर्ग शामिल थे। निर्णायक मंडल में सुशील चौरडिया, प्रकाश मालू, और सुशील चौपड़ा थे।

कनिष्ठ वर्ग में प्रथम मायरा चण्डालिया, द्वितीय तनिष्का कोठारी और तृतीय रसिका सिंघी रही। टीनएजर्स

वर्ग में प्रथम चाहत सुराणा और द्वितीय दिव्यम बैद रहे। मुनि जिनेशकुमार जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए माता-पिता और गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला और बच्चों को अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता पर जोर दिया।

माता-पिता केवल जन्म ही नहीं, जीवन भी देते हैं। वे ही माता-पिता भाग्यशाली होते हैं जो अपने बच्चों को सद्मार्ग व धर्म की ओर अग्रसर करते हैं। माता-पिता स्वयं संस्कारी बने, चरित्रवान बने और धर्म के प्रति आस्था रखें तो बच्चे अच्छे इन्सान बनते हैं।

मुनिश्री ने मित्रता के बारे में बताते

हुए कहा कि वास्तव में अपनी आत्मा ही मित्र है। व्यवहार के धरातल पर हम यह कह सकते हैं कि मित्र वह होता है जो सुख-दुःख में काम आता है। स्वार्थी, लोभी, क्रोधी दोस्त पग-पग पर नुकसान पहुंचाते हैं, इसलिए सोच विचार कर दोस्त बनाना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेयुप उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने और आभार ज्ञापन मंत्री अमित बैगवानी ने किया। सभी विजेताओं और प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन भरत भंडारी ने किया।

## भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन

### गाँधीनगर, दिल्ली।

'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी ठाणा-5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर दिल्ली में तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तत्पश्चात तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा विजय गीत का संगान किया

गया व श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन गाँधीनगर सभाध्यक्ष निर्मल छल्लाणी ने किया। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी रविप्रभाजी ने श्रावक-श्राविका समाज को भक्तामर का महत्व बताते हुए कहा कि आचार्य मानतुंग द्वारा रचित यह स्तोत्र सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसका एक-एक श्लोक मंत्र से ओत-प्रोत व बहुत ही चमत्कारी है। स्तोत्र के साथ अर्थज्ञान भी होना जरूरी है। भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान

के प्रायोजक अनिल बैद का तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा सम्मान किया गया। संयोजक अरिहंत बैद का अथक श्रम रहा। साथ ही गाँधीनगर सभा परिवार, विकास मंच परिवार, महिला मंडल पूर्वी-दिल्ली परिवार का भी सहयोग रहा।

मंच संचालन तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली के मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया। अनुष्ठान में लगभग 121 जोड़े व 81 भाई-बहनों के साथ कुल 323 लोगों ने भाग लिया।

## सीपीएस का कार्यक्रम सम्पन्न

### अहमदाबाद।

तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा आयोजित कांफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) के ग्रेजुएट्स के रीयूनियन का कार्यक्रम सीखने, प्रेरणा और मस्ती का अनोखा मेल था। मिनी कोठारी ने बिना शब्दों के संवाद पर आधारित आइस-ब्रेकिंग एक्टिविटी से कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसने माहौल को जीवंत बना दिया।

सीसीएस नेशनल ट्रेनर दिनेश बुरड ने 'एक आईडिया आपकी दुनिया बदल सकता है' सेशन में सभी को बड़ा सोचने और कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने अपने अनुभव साझा किए, जिसमें एक CPS प्रतिभागी से लेकर किताब के लेखक बनने की यात्रा शामिल

थी। तेयुप अहमदाबाद अध्यक्ष पंकज घीया ने 'Let's Learn Together and Grow Together' सत्र का संचालन किया, जिसमें प्रतिभागियों की अपेक्षाओं पर चर्चा की गई। उन्होंने CPS क्लब को व्यक्तिगत विकास के लिए बेहतरीन मंच बताते हुए नए स्किल्स सीखने, नेटवर्क बनाने, और सामाजिक दायित्व निभाने के अवसरों पर जोर दिया।

कार्यक्रम का सफल संचालन और आभार ज्ञापन तेयुप अहमदाबाद सहमंत्री जिकेश भरसारिया ने किया। संयोजक विवेक संकलेचा, अर्पित मेहता, मिनी कोठारी, अभिषेक बुरड, अरुण दोशी, और संभव धेलरिया के विशेष प्रयासों से यह कार्यक्रम सफल रहा। लगभग 60 सीपीएस ग्रेजुएट्स की उपस्थिति ने इस रीयूनियन को एक बड़ी सफलता दिलाई।

## स्कूल के बच्चों में निःशुल्क बांटी नोट बुक्स

### राजराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए कास्यपुरा गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल रामनगर में पढ़ रहे बच्चों को हनुमानमल, संजय कुमार, मनोज कुमार बैद परिवार नोखा बेंगलुरु के सहयोग से नोट बुक्स का वितरण करवाया।

परिषद् अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। स्कूल प्राध्यापक ने उनकी जरूरत पर उन्हें बुक्स उपलब्ध करवाने के लिए तेयुप आर आर नगर का धन्यवाद किया।



## संक्षिप्त खबर

### रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

**पूर्वांचल कोलकाता।** अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप पूर्वांचल कोलकाता ने तुलसी वाटिका में जैन संस्कार विधि से रक्षा बंधन कार्यशाला आयोजित की। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्कारक पुष्पराज सुराना और सुमेरमल बैद ने नवकार महामंत्र के उच्चारण से किया। उन्होंने जैन संस्कार विधि के महत्व और रक्षा बंधन के सही तरीके की जानकारी दी। कार्यक्रम में 20 भाई-बहनों ने हिस्सा लिया। अध्यक्ष नवीन सिंघी ने सभी का स्वागत और आभार व्यक्त किया।

### तेरापंथ टास्क फोर्स से मिला प्रशिक्षण

**सूरत।** अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स भगवान महावीर इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें मुख्य प्रशिक्षक मुम्बई से समागत चिराग पामेचा और सूरत से जीनियस मेहता उपस्थित रहे। उन्होंने बच्चों को ब्लिंडिंग, फ्रैक्चर, इंजरी और चोकिंग आदि में प्राथमिक उपचार करने की जानकारी दी। लगभग 150 छात्रों की उपस्थिति के साथ भगवान महावीर इंटरनेशनल स्कूल के प्रिंसिपल और शिक्षक भी मौजूद रहे। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन गादिया द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। टीटीएफ टीम के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री सौरभ पटावरी द्वारा किया गया।

### संगठन यात्रा का आयोजन

**मदुरै।** अभातेमम की केरल एवं तमिलनाडु प्रभारी माला कातरेला एवं अनीता बरडिया संगठन यात्रा के अंतर्गत मदुरै क्षेत्र पधारी। अनिता बरडिया ने साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी का संदेश वाचन किया। चंदादेवी आँचलिया ने अभातेममं अध्यक्ष सरिता डागा का संदेश वाचन किया। मदुरै महिला मंडल की अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय कैसर अवेयरनेस संयोजिका अनीता बरडिया ने समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत होने वाली गतिविधियों पर संक्षिप्त में जानकारी दी। माला कातरेला ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चारों योजनाओं के बारे में बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया। माला कातरेला ने स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अंतर्गत 7 सूत्र बताए। तेरापंथ महिला मंडल, मदुरै द्वारा भावना चौका में सहयोग राशि प्रदान की गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया। उपाध्यक्ष मधु पारख द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

### फिट युवा हिट युवा का आयोजन

**अहमदाबाद।** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में फिट युवा-हिट युवा आयाम के तहत तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद ने तेरापंथ भवन शाहीबाग में मुनि मदनकुमारजी तथा प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा द्वारा प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग कर स्वस्थ मन संतुलित जीवन की साधना की। अभातेयुप द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद एवं किशोर मंडल अहमदाबाद द्वारा आयोजित साइक्लिंग इवेंट का आयोजन अहमदाबाद के रिवर फ्रंट पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वेस्ट जोन कोऑर्डिनेटर कुलदीप नवलखा ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री जय छाजेड़ ने किया।

❖ इन्द्रियों अपने आप में अज्ञुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

— आचार्य श्री महाश्रमण

# अर्हत् स्तुति से जागृत होती है आत्मशक्ति प्राणशक्ति और चैतन्यशक्ति

## साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में लोगस्स जप अनुष्ठान का भव्य कार्यक्रम प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए मुनि श्री जिनेश कुमार जी ने कहा- जीवन को सौम्य निर्मल, सात्विक एवं सर्वांग बनाने की एक दिव्य साधना है- अर्हत् स्तुति। अर्हत् स्तुति से आत्मशक्ति, प्राणशक्ति, चैतन्यशक्ति जागृत होती है और इससे चित्त निर्मल, सुखानुभूति,

अपूर्व निर्जरा होती है। अर्हत् स्तुति से जीव सम्यक्त्व की विशुद्धि को प्राप्त होता है। लोगस्स अर्हत् स्तुति का महामंत्र है। लोगस्स तीर्थकर स्तुति का महान मंत्र है। भक्ति साहित्य की एक अमर अलौकिक रहस्यमयी और विशिष्ट रचना है।

लोगस्स का पाठ लोकाग्र तक जाने की लिफ्ट है। इसमें भक्ति भाव से तीर्थकरों की स्तुति की गई है। लोगस्स पद है, स्तोत्र है। इसमें सात गाथा है। प्रत्येक गाथा के चार चरण हैं कुल अक्षर 256 हैं। तीर्थकर स्तुति रक्षा कवच है। लोगस्स एक अपराजित मंत्र है। इसकी साधना सर्वकाल एवं सर्वदृष्टि से मंगलकारी, कल्याणकारी शुभंकर एवं

सर्वसिद्धि दायक है। प्रवचन से पूर्व मुनि जिनेश कुमार जी ने लोगस्स एवं उससे सम्बंधित मंत्रों का जप एवं अनुष्ठान करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगल संगान से हुआ। नीदरलैंड से समागत आव्या भूतोड़िया ने चौबीसी के पार्श्वस्तुति गीत का संगान किया। स्वागत साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने व आभार मंत्री बसंत पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता क्षेत्र के 1400 से अधिक श्रावक - श्राविकाएँ जप अनुष्ठान में शामिल हुए।

## मासखमण तपोभिन्दन कार्यक्रम

### पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में माया सुरेश भंसाली का इस चातुर्मास का दिल्ली महानगर का पहला मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी श्री ने कहा- जिनशासन का प्राणतत्व है- तपस्या। तपस्या जिनशासन का श्रृंगार है, भैक्षण-गण का आधार है। आज भी हजारों-हजारों तपस्वी तपस्या करके गण की नीवों को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। तपस्या कर्म निर्जरा का अमोघ

साधन है। तपस्या वह संजीवनी बूटी है जिसे लेकर व्यक्ति आधि-व्याधि एवं उपाधि से मुक्त बन सकता है। तपस्या वह रामबाण औषधि है जिससे तपस्वी कर्म रोग से निजात पा सकता है।

साध्वीश्री ने कहा तपस्विनी बहन माया ने मासखमण जैसा दुष्कर तप किया है। तेरह की तपस्या का पारणा करने वाली बहन गुरुदेव के आशीर्वाद एवं हमारी प्रेरणा से आगे बढ़ गई और आज मासखमण तक पहुंच गई।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी वृंद ने

मासखमण की अनुमोदना सुमधुर स्वर लहरी से की।

साध्वी प्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन मंत्री विरेन्द्र जैन ने किया। दिल्ली सभा उपाध्यक्ष विमल बैगाणी, पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, तेयुप से रवि जैन, महिला मंडल से इन्दु पटावरी, परिवार से संजय बोथरा आदि ने तप की अनुमोदना की। भिक्षु भक्त मंडल ने मंगल संगान किया। महिला मंडल एवं पारिवारिक बहनों ने तप अनुमोदना में गीत की प्रस्तुति दी।

आभिनंदन पत्र का वाचन पूर्व मंत्री सुरेन्द्र मालू ने किया।

## स्वर विज्ञान से अनेक समस्याओं का समाधान

### कांदिवली।

तेरापंथ भवन कांदिवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली और मलाड के तत्वावधान में स्वर विज्ञान कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा- स्वर विज्ञान जैन परम्परा का प्राचीन महत्वपूर्ण उपक्रम है। यह साधना प्राण शक्ति की साधना है।

हठ योग की भाषा में चन्द्र स्वर को ईडा, सूर्य स्वर को पिंगला और दोनों स्वर की संयुति को सुषुम्ना कहा जाता है। तिथि वार और दिशा के साथ

स्वरों का सही नियोजन करके करणीय और अकरणीय कार्य का निर्णय किया जा सकता है। सोमवार, बुधवार और शुक्रवार ये तीनों चन्द्रस्वर से संबंधित हैं, जबकि मंगलवार, शनिवार और रविवार- ये तीनों सूर्यस्वर से जुड़े हैं। गुरुवार सबके साथ जुड़ा है जिसका गुरु प्रबल होता है वहां समस्याएं हावी नहीं होती।

साध्वी श्री ने कहा व्यक्ति कोई भी कार्य करता है, वह सफल होना चाहता है। इसके लिए स्वरों का ज्ञान आवश्यक है। हर सौम्य कार्य या किसी भी कार्य के स्थायित्व के लिए चन्द्र स्वर का होना आवश्यक है। पृथ्वी, जल, वायु,

अग्नि और आकाश इन पांच तत्वों के साथ भी स्वर संयोजन किया जाता है। किसी कार्य को इच्छानुसार सम्पादित करने के लिए स्वरों को बदला भी जा सकता है। गर्मी के समय चन्द्रस्वर की साधना करने से और सर्दी में सूर्यस्वर की साधना करने से अत्यधिक सर्दी या गर्मी का अहसास नहीं होता। भोजन करते समय सूर्य स्वर चले तो पाचन सही होता है। स्वस्थता के लिए स्वरों का संतुलन आवश्यक है।

साध्वी वृंद ने 'अद्भुत स्वर विज्ञान का ज्ञान' गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाया।





## संक्षिप्त खबर

### महिला मंडल-संगठन यात्रा

अमराईवाडी। संगठन यात्रा के तहत क्षेत्रीय सार संभाल करने अ.भा.ते.म.मं. की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या, गुजरात क्षेत्रीय कन्या मंडल प्रभारी अदिति सेखानी, क्षेत्रीय प्रभारी नीतू बेद एवं अ.भा.ते.म.मं. की सदस्या वर्षा लुनिया पधारे। साध्वी काव्यलता जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत एवं स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने पधारे हुए पदाधिकारियों एवं बहनों का स्वागत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की सदस्या वर्षा लुनिया द्वारा संदेश वाचन कर कन्याओं को साथ लेकर चलने हेतु प्रेरित किया। क्षेत्रीय प्रभारी नीतू बेद ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की योजनाओं के बारे में बताया और मंडल में चल रहे गतिविधि रजिस्टर की सार संभाल ली और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी भी दी। शाखा की बहनों की जिज्ञासा का समाधान भी किया।

### योग कार्यशाला का आयोजन

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इरोड के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में योग के महत्व एवं मुद्राओं की आवश्यकता बताते हुए कार्यशाला रखी गई। इस कार्यशाला के अंतर्गत ममता दमानी ने बहुत ही सुंदर रूप से योग की मुद्राएं और उनके महत्व के बारे में जानकारी दी। लगभग 35 बहनों की उपस्थिति रही। अध्यक्ष पिकी भंसाली ने स्वागत एवं मंत्री पूनम दुगड ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

### भक्तामर स्तोत्र पाठ का आयोजन

पालघर। रविवारीय कार्यक्रम अंतर्गत साध्वी पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में सामूहिक भक्तामर स्तोत्र पाठ का आयोजन किया गया। भक्तामर स्तोत्र के महत्व को प्रकाशित करते हुए साध्वी श्री ने कहा कि भक्तामर स्तोत्र आचार्य मानतुंग द्वारा रचित एक शक्तिशाली स्तोत्र है। इसकी रचना मात्र से अड़तालीस तालों में कैद आचार्य मानतुंग आजाद हो गए। आज भी इसका प्रभाव हम यत्र-तत्र देख सकते हैं। भक्तामर स्तोत्र को कंठस्थ कर, प्रतिदिन पाठ करके श्रावक अपने आपको शक्तिशील बनाए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री दिनेश राठौड़ ने किया।

### अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा किया गया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का द्वितीय आयोजन मॉडर्न ग्लोरी स्कूल में किया गया, जिसमें चित्रकला एवं गायन की प्रतियोगिता आयोजित हुई। मॉडर्न ग्लोरी स्कूल के लगभग 23 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष दीपक नखत, उम्मेद राखेचा, मोहित बैद, शांति गुजराणी का श्रम रहा। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया। कार्यसमिति सदस्य मोहित बैद ने विद्यार्थी अणुव्रत का वाचन कर संकल्पित कराया।

### समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत कार्यशाला

टिटलागढ़। अभातेममं के निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत महिला मंडल टिटलागढ़ स्थानीय शासकीय उच्च बालिका विद्यालय पहुंची। कार्यशाला के अन्तर्गत आलस्य नहीं समय का सदुपयोग करें विषय पर दीपिका जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष बबीता जैन ने बच्चों से महाप्राण ध्वनि एवं कोषाध्यक्ष पूजा जैन द्वारा वृक्षासन का प्रयोग करवाया गया। लगभग 60 बच्चों के बीच भाषण प्रतियोगिता रखी गई जिसमें बच्चों ने उत्साह से भाग लिया।

### संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

#### जैन विधि-अमूल्य निधि

##### नामकरण संस्कार

■ गुवाहाटी। राजलदेसर निवासी विजय कुमार-शान्ति देवी कुण्डलिया के सुपौत्र एवं चेतन-गरिमा कुण्डलिया के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक राकेश जैन, आनंद सुराणा एवं छतरसिंह चोरड़िया ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपादित करवाया।

##### नूतन प्रतिष्ठान

■ राजाजीनगर। तेयुप राजाजीनगर द्वारा स्व. बाबूलाल गन्ना के सुपुत्र संजीव गन्ना के नूतन प्रतिष्ठान 'विश्वास ज्वेलर्स' का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया गया। संस्कारक राजेश देशसरिया, सतीश पोरवाड़ एवं रनित कोठारी ने मंगल भावना यंत्र एवं जैन संस्कार विधि की महत्ता का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा विधि को संपन्न करवाया।

## मगधभाषा अनुचिंतन सेमिनार का आयोजन

#### नई दिल्ली।

अणुव्रत भवन में साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा के सान्निध्य में मगधभाषा अनुचिंतन सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल के डॉ. केशव मान शाक्य विशेष रूप से उपस्थित थे। विभिन्न देशों से प्रबुद्ध वर्ग के लोग इस सेमिनार में शामिल हुए। संगोष्ठी में मगध भाषा को भारतीय

भाषाओं में शामिल करने पर विशेष चिंतन किया गया। साध्वी कुन्दनरेखा ने कहा कि भगवान महावीर ने अर्धमागधी भाषा में प्रवचन दिए थे, जो न केवल आगमों के रूप में हैं, अपितु साधनारत साधकों को प्रेरित करते हैं, साथ ही समाज की दिशा और दशा को भी निर्धारित करने में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में मगध भी एक महत्वपूर्ण भाषा है, जैसा कि

भगवान महावीर के प्रवचनों से प्रमाणित होता है।

राष्ट्रहित चिंतक मंच के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में बिहार, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब और दिल्ली से कई प्रबुद्ध महानुभाव शामिल हुए। संगोष्ठी का कुशल संचालन संजय अणुव्रती ने किया। राजेश कश्यप और विनोद आर्य ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

## एक साथ दो संतों की तपस्याओं का प्रत्याख्यान

#### डोंबिवली।

उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनिकु नमिकुमार जी व मुनि मुकेश कुमार जी ने तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि भैक्षवशासन जयवंता शासन है, इसकी नींव त्याग तपस्या से लगी है। आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासन काल में नित नये कीर्तिमान बनते जा रहे हैं। गत वर्ष वर्षीतप के तपस्वियों का कीर्तिमान था तो गत चातुमास में इक्कीस रंगी तपस्या का कीर्तिमान बना। इस बार सूरत में एक साथ अठारह तप कीर्तिमान बना और भी कितनी तरह के कीर्तिमान बनते जा रहे हैं। पूज्य प्रवर की अखंड पुण्याई है। इस भौतिक युग में इतने तपस्वियों का होना अपने आप में परम सौभाग्य की बात है। पूज्य प्रवर के कर कमलों संयम रत्न स्वीकार करने वाले साधु-साध्वियों में मुनि नमिकुमार जी अद्वितीय संत कहे जा सकते हैं। इन्होंने मात्र 8 वर्ष के संयम पर्याय में तपस्या का अंभार लगा दिया। उपवास, बेले, तेले ही नहीं 25 से 38 तक के

तथा 1 से 16 तक की तपस्या की लड़ी बना दी, उसके अलावा 18-19-20-51-62 की तपस्या और उसके साथ इतने प्रांतों की सुदीर्घ यात्राएं सुनकर मन आश्चर्य चकित हो जाता है।

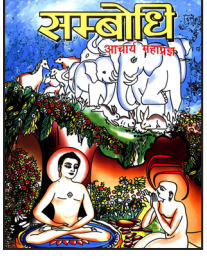
मुनिश्री ने आगे कहा कि 66 वर्ष की अवस्था में दीक्षा लेकर इस प्रकार तपस्या और यात्रा कर पाना गुरूओं की कृपा बिना असंभव है। मुनि मुकेशकुमार जी को भी अभी दीक्षा के 6 महीने ही हुए हैं जिसमें वर्षीतप, बेले और नौ की तपस्या करना और स्वावलंबी रहना बड़ी बात है। इनकी इच्छा है कि कुछ दिन और तपस्या करूँ परंतु वर्षीतप पचखा हुआ है इसलिए अभी आगे बढ़ना उचित नहीं लग रहा है। तपस्या की भावना रहनी चाहिये, परंतु द्रव्य क्षेत्र काल भाव सबको देखना जरूरी है। कार्यक्रम में मुनि नमि कुमार जी ने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सबसे पहले मैं मेरे गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने मुझे इस अवस्था में दीक्षा देकर तार दिया। फिर मैं मेरे अग्रणी मुनि कमल कुमार जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि आपकी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन

के कारण ही मैं कुछ कर पाया हूँ। मेरी कोई विशेष करणी की हुई थी कि मुझे ऐसे अग्रणी मिले जो मेरी पूरी सार संभाल करते हैं, मुझे हर समय जागरूक बनाकर रखते हैं। मुनि अमन कुमार जी, मुनि मुकेश कुमार जी का भी मुझे पूरा सहयोग मिल रहा है, सबके सहयोग से ही मैं कुछकर पाता हूँ। सूरत से मेरा संसारपक्षीय परिवार आया है, उनकी आज्ञा से ही मुझे दीक्षा प्राप्त हुई, उनका भी बड़ा उपकार है। डोंबिवली क्षेत्र बड़ा साताकारी है, यहां के भाई बहनों का भी सहयोग रहता है।

कार्यक्रम में मुनि अमनकुमार जी ने स्वरचित गीत का संगान किया। मुनि मुकेश कुमार जी ने भी अपने हृदयोगार व्यक्त किए। तरपस्वी चन्दनमल ढींग ने पूज्यवर के संदेश का वाचन किया। भगवती लाल सोनी ने साध्वी शकुंतला कुमारी जी की भावना प्रस्तुत की। संजय खाय्या ने साध्वी मंजूयशा जी की तथा सुरेश बैद ने 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी के संदेश का वाचन किया। साध्वियों द्वारा प्रेषित गीत का संगान महिला मंडल की बहनों तथा ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने प्रस्तुति दी।



## संबोधि



### गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

यहीं से द्वेष बढ़ता है। प्रमाद, असावधानी, आलस्य तमोगुणी व्यक्ति का लक्षण है। प्रमादी व्यक्ति अकारण ही हिंसा कर बैठता है।

अपने प्रयोजन के लिए मनुष्य पाप-कर्म करता है, अधर्म-व्यापार करता है, यह स्वाभाविक है परंतु बिना प्रयोजन, बिना स्वार्थ, व्यर्थ में अधर्म व्यापार करना, बुरे कार्य करना कहां तक उचित है? बिना मतलब किसी पाप कार्य में प्रवृत्ति करने का त्याग करना, अनर्थ-दण्ड विरति व्रत है। गृहस्थ को अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करना पड़ता है। आठवां व्रत हमें यह सिखाता है कि कम-से-कम अनर्थ पाप से तो बचें। बिना प्रयोजन चलते-फिरते किसी को मार डालना, गाली देना, झगड़ा करना, ईर्ष्या करना, द्वेष करना, वनस्पति को कुचलते हुए चलना, बत्ती को जलाकर छोड़ देना, घी-तेल के बर्तनों को खुला छोड़ देना इत्यादि ऐसे अनेक काम हैं जिनसे बचना या परहेज करना अहिंसा की दृष्टि से तो प्रशंसनीय है ही किन्तु व्यवहार दृष्टि से भी अच्छा है।

दिग्विरति, भोगोपभोग विरति और अनर्थदंड विरति-ये तीनों व्रत अणुव्रतों के पोषक हैं, अतः इन्हें गुणव्रत कहा गया है।

३४. सावद्ययोगविरतेरभ्यासो जायते ततः।

समभावविकासः स्यात्, तच्च सामायिकं व्रतम्॥

जिससे सावद्य-पापकारी प्रवृत्तियों से निवृत्त होने का अभ्यास होता है, समभाव का विकास होता है, वह 'सामायिक' व्रत कहलाता है।

धर्म समतामय है। राग-द्वेष विषमता है। समता का अर्थ है राग-द्वेष का अभाव। विषमता है राग-द्वेष का भाव। समभाव की आराधना के लिए सामायिक व्रत है। एक मुहूर्त तक सावद्य प्रवृत्ति का त्याग करना सामायिक व्रत है।

यह आत्मविकास की सुन्दर प्रक्रिया है। पूर्वोक्त व्रतों की अपेक्षा इसमें आत्मा का सान्निध्य अधिक साधा जाता है। इसका काल-मान ४८ मिनट का है। इसमें मानसिक, वाचिक और कायिक समस्त असत् प्रवृत्तियों का परित्याग किया जाता है। सर्वारंभ-परित्यागी शब्द से सामायिक की तुलना की जा सकती है। यह स्थूल रूप से मुनि जीवन की-सी साधना है। साधक यहां आकर समता में लीन हो जाता है। उसका मन लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा और मान-अपमान आदि द्वन्द्वों में सम बन जाता है। 'समलोष्टकांचनः' उसके लिए पत्थर और सोना एक समान है। गीता में जो भक्त के लक्षण हैं वे समभावी व्यक्ति के जीवन में अक्षरशः चरितार्थ होते हैं-जो न प्रसन्न होता है, न द्वेष करता है, न दुःख मानता है, न इच्छा करता है और जिसने भले और बुरे दोनों का परित्याग कर दिया है इस प्रकार जो मेरी भक्ति करता है, वह मुझे प्रिय है। जो शत्रु और मित्र दोनों के साथ एक-सा बर्ताव करता है, जो सर्दी-गर्मी और दुःख-सुख में एक जैसा रहता है और जो आसक्ति से रहित है, वह मुझे प्रिय है।

ईसा के शब्दों में-'वह अपने सूर्य को बुरे और भले दोनों पर उदित करता है और वर्षा को न्यायी और अन्यायी दोनों पर बरसाता है।'

३५. सावधिकञ्च हिंसादेः, परित्यागो यथाविधि।

क्रियते व्रतमेतत्तु, देशावकाशिकं भवेत्॥

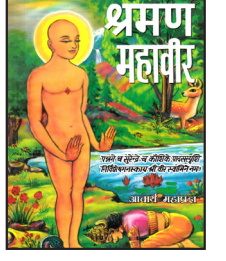
एक निश्चित अवधि के लिए विधिपूर्वक जो हिंसा का परित्याग किया जाता है वह 'देशावकाशिक' व्रत कहलाता है।



-आचार्यश्री महाश्रमण

## श्रमण महावीर

### अनुकूल उपसर्गों के अंचल में



(पिछला शेष)

भगवान् प्रायः मौन रहने का संकल्प पहले ही कर चुके हैं। अब जैसे-जैसे ध्यान की गहराई में जा रहे हैं वैसे-वैसे उसका अर्थ स्पष्ट हो रहा है। वाक् और स्पन्दन का गहरा सम्बन्ध है। विचार की अभिव्यक्ति के लिए वाणी और वाणी के लिए मन का स्पन्दन ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। नीरव होने का अर्थ है मन का नीरव होना। भगवान् के सामने एक तर्क उभर रहा है-जिसे मैं देखता हूँ, वह बोलता नहीं है और जो बोलता है, वह मुझे दिखता नहीं है, फिर मैं किससे बोलूँ? इस तर्क के अन्तस् में उनका स्वर विलीन हो रहा है।

भगवान् बोलने के आवेग के वश में नहीं हैं। बोलना उनके वश में है। वे उचित अवसर पर उचित और सीमित शब्द ही बोलते हैं। वे भिक्षा की याचना और स्थान की स्वीकृति के लिए बोलते हैं। इसके सिवा किसी से नहीं बोलते। कोई कुछ पूछता है तो उसका संक्षिप्त उत्तर दे देते हैं। शेष सारा समय अभिव्यक्ति और संपर्क से अतीत रहता है।

### अनुकूल उपसर्गों के अंचल में

जल कमल को उत्पन्न करता है। उसके परिमल को फैलाता है पवन। उसकी अनुभूति करता है प्राण। सब अपना-अपना काम करते हैं, तब एक काम निष्पन्न होता है। वह है-परिमल के अस्तित्व का बोध।

१. भगवान् दीक्षित होने को प्रस्तुत हुए। परिवार के लोगों ने उनका अभिषेक किया। फिर उनके शरीर को सुवासित किया-किसी ने दिव्य गोशीर्ष-चन्दन से, किसी ने सुगंधित चूर्ण से और किसी ने पटवास से। भगवान् का शरीर सुगंधमय हो गया।

मधुकरों को परिमल के अस्तित्व का बोध हुआ। वे पुष्पित वनराजि और कमलकोशों को छोड़ भगवान् के शरीर पर मंडराने लगे। वे चारों ओर दे रहे थे परिक्रमा और कर रहे थे गुंजारव। उपवन का ज्ञात और नीरव वातावरण ध्वनि से तरंगित हो गया। मधुकर भगवान् के शरीर पर बैठे।

उन्हें पराग-रस नहीं मिला। उड़कर चले गए। परिमल से आकृष्ट हो फिर आए और पराग न मिलने पर फिर उड़ गए। इस परिपाटी से संरुष्ट हो, वे भगवान् के शरीर को काटने लगे।

२. भगवान् कर्मारग्राम में गए। वहां कुछ युवक सुगंधि से आसक्त हो भगवान् के पास आए। उन्होंने अवसर देख भगवान् से प्रार्थना की, 'राजकुमार! आपने जिस गंधचूर्ण का प्रयोग किया है, उसके निर्माण की युक्ति हमें भी बताइए।' भगवान् ने इसका उत्तर नहीं दिया। वे कुछ हो गालियां देने लग गए।

३. भगवान् का शरीर सुगठित, सुडौल और सुन्दर था। उनके चुंघराले बाल बहुत ही आकर्षक लगते थे। उनकी आंखें नीलकमल के समान विकस्वर थी। उनके रूप-वैभव को देख अनेक रूपसियां प्रमत्त हो जातीं। एक बार रात के समय भगवान् के पास तीन रूपसियां आईं। एक बोली, 'कुमार! तुम्हारी स्त्री कौन है-ब्राह्मणी है या क्षत्रियाणी? वैश्या है या शूद्रा?'

'कोई नहीं है।'

'हम बन सकती हैं, तुम किसे पसन्द करते हो?'

'किसी को भी नहीं।'

अरे! यह कैसा युवक जो हम जैसी रूपसियों को पसन्द नहीं करता ?'

## धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है  
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

### -आचार्यश्री महाश्रमण समाधि-वृद्धि का प्रयोग



ध्यान निवृत्ति का मार्ग है। स्वाध्याय प्रवृत्ति है। वह भी अपेक्षित है। ध्यान के साथ उसका भी महत्त्व है। स्वाध्याय का अर्थ है- साधना के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन प्राप्त करना। साधना की ओर अग्रसर करने वाली प्रवृत्ति का नाम है शुभ योग।

साधना की दृष्टि से तीन शब्द ज्ञातव्य हैं-

१. अशुभ योग
२. शुभ योग
३. अयोग।

'योग' शब्द का अर्थ है- प्रवृत्ति। अध्यात्म या साधना से दूर करने वाली मानसिक, वाचिक और कायिक प्रवृत्ति का नाम है अशुभ योग। अर्थात् राग- द्वेष या कषाय की प्रवृत्ति अथवा उससे जनित प्रवृत्ति अशुभ योग है। हमारी साधना में अवरोध और अवनति पैदा करने वाला तत्त्व कषाय है। उससे होने वाली प्रवृत्ति अशुभ योग है। साधक को सबसे पहले ध्यान देना होता है कि वह अशुभ योग से सर्वथा अथवा अधिक से अधिक बचे।

राग-द्वेष-रहित तथा अध्यात्म की ओर अग्रसर करने वाली मानसिक, वाचिक और कायिक प्रवृत्ति का नाम शुभ योग है। उदाहरणार्थ साधु-पुरुषों का संग करना, उनका उपदेश सुनना, विनय करना, आध्यात्मिक साहित्य का स्वाध्याय करना आदि-आदि।

शुभ योग भी एक साधन है। साधन किसी अवस्था में अवश्य त्याज्य होता है। जब तक मनुष्य शुभ योग को भी छोड़ नहीं देता है वह मुक्तावस्था को उपलब्ध नहीं होता। मुक्तावस्था प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि साधक अयोगी बने। जैन साधना-पद्धति के अनुसार साधना की चौदह भूमिकाएं हैं- उनमें चौदहवीं भूमिका है- अयोगी केवली गुणस्थान। इस स्थिति में साधक सर्वथा अप्रकम्प-चंचलतारहित बन जाता है और चंद्र क्षणों में वह शरीर का त्याग कर मुक्तावस्था को प्राप्त हो जाता है। इससे हमने जाना कि शुभ योग भी सदा स्थायी नहीं है। साधना की पूर्णता प्राप्त करने के लिए उसका भी विच्छेद करना होता है। इसीलिए ध्यान की एक परिभाषा की गई "योग-निरोधो ध्यानम्"- योग (मन, वचन और शरीर की प्रवृत्ति) के निरोध का नाम ध्यान है। कोई भी क्रिया करते हुए साधक को यह ध्यान देना चाहिए कि उसके द्वारा केवल आवश्यक प्रवृत्ति हो, अनावश्यक कुछ भी प्रवृत्ति उसके द्वारा न हो। इस चर्चा का निष्कर्ष है साधना के लिए १. अनावश्यक प्रवृत्ति न करना। २. आवश्यक प्रवृत्ति भी समता भाव से करना। ध्यान के संबंध में कहा गया है-

सीसं जहां सरीरस्स, जहां मूलं दुमस्स य।

सव्वस्स साहु धम्मस्स, तहा ज्ञाणं विधीयते।।

'धर्म में ध्यान का वही मूल्य है जो शरीर में सिर का और वृक्ष में जड़ का होता है।'

ध्यान के प्रकार

आगमों में ध्यान के चार प्रकार निर्दिष्ट हैं- आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। 'ठाण' में इनकी विवेचना प्राप्त होती है। वहां उल्लिखित है कि आर्त ध्यान चार प्रकार का होता है-

१. अमनोज्ञ- संयोग से संयुक्त हो जाने पर उसके वियोग की चिन्ता में लीन हो जाना।
२. मनोज्ञ- संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग न होने की चिन्ता में लीन हो जाना।
३. आतंक- सद्योघाती रोग के संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग की चिन्ता में लीन हो जाना।
४. प्रीतिकर- कामभोग के संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग न होने की चिन्ता में लीन हो जाना।

आर्त ध्यान के चार लक्षण हैं- आक्रन्दन करना, शोक करना, आंसू बहाना, विलाप करना।

रौद्र ध्यान चार प्रकार का होता है-

१. हिंसानुबन्धी- जिसमें हिंसा का अनुबन्ध (सतत प्रवर्तन) हो।
२. मृषानुबन्धी- जिसमें मृषा (असत्य) का अनुबन्ध हो।
३. स्तेयानुबन्धी- जिसमें चोरी का अनुबन्ध हो।
४. संरक्षणानुबन्धी- जिसमें विषय के साधनों के संरक्षण का अनुबन्ध हो।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

### आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री लालजी (चंदेरा) दीक्षा क्रमांक : 122

मुनिश्री प्रकृति से सरल और बहुत परिश्रमी थे। समिति-गुप्ति में जागरूक, विनयशील और संघ के प्रति पूर्व निष्ठावान थे तथा साथ में बड़े तपस्वी भी थे। आपने उपवास, बेले, तेले आदि अनेक बार किये। शेष तप की तालिका इस प्रकार है - 4/1, 5/1, 7/1, 9/1, 11/1, 12/1, 13/1, 16/1 मासखमण/5। आपने शीतकाल में शीत और उष्णकाल में उष्ण बहुत सहन किया।

- साभार: शासन समुद्र -

सितम्बर 2024

सप्ताह के विशेष दिन

9 सितम्बर

आचार्यश्री कालूगणी  
महाप्रयाण  
दिवस

12 सितम्बर

भगवान सुविधिनाथ निर्वाण  
कल्याणक  
आचार्यश्री तुलसी पट्टोत्सव,  
(31वां विकास महोत्सव)

15 सितम्बर

आचार्यश्री  
डालगणी महाप्रयाण  
दिवस

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स  
समाचार प्रेषकों से निवेदन

समाचार केवल वर्ड या पीडीएफ  
फॉर्मेट में [abtyptt@gmail.com](mailto:abtyptt@gmail.com)  
ईमेल पर ही भिजवाएं।

एक से अधिक दिनों के कार्यक्रम  
जैसे शिविर, पर्युषण आदि के  
समाचार एक साथ भिजवाएं।

निवेदक : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स



ऑनलाइन पढ़ने के लिए  
[terapanthtimes.com](http://terapanthtimes.com)



# कैंसर जागरूकता अभियान कार्यशाला

## बोरावड़।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कैंसर जागरूकता अभियान की कार्यशाला तेरापंथ महिला मंडल बोरावड़ द्वारा तेरापंथ भवन बोरावड़ में साध्वी गुप्तिप्रभाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में रखी गई। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री के नवकार मंत्र के उच्चारण से किया गया। तत्पश्चात् महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। तेरापंथ सभा के निवर्तमान मंत्री रायचंद बोथरा द्वारा मुख्य अतिथि डॉक्टर प्रदीप शर्मा को एवं तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विकास चौरडिया द्वारा अणुव्रत विश्व भारती के मीडिया प्रभारी पंकज दूधोरिया को दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष हर्षा चौरडिया द्वारा स्वागत

भाषण दिया गया। पंकज दूधोरिया ने कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी पर अपने विचार व्यक्त किए गए। उन्होंने बताया कि हमें अपनी दैनिक दिनचर्या को विधिवत रखना चाहिए तथा अपने खान-पान में जागरूकता रखनी चाहिए और योग और प्राणायाम को अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनाना चाहिए। डॉक्टर प्रदीप शर्मा ने बताया कि कैंसर कई प्रकार का होता है। इस स्थिति में हमारे शरीर में अनेक प्रकार के परिवर्तन आने लगते हैं जैसे कमजोरी आना, भूख न लगना, वजन का घटना-बढ़ना आदि, ऐसी स्थिति में हमें तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। आगे यह भी बताया कि तीन प्रकार का सफेद जहर होता है जो कि प्रतिदिन हमारे शरीर के अंदर जाता है नमक, शक्कर और मैदा। इसका हमें कम से कम उपयोग करना चाहिए। हमें

पिज्जा, बर्गर, पास्ता आदि फास्ट फूड से बचना चाहिए। आज सबसे ज्यादा ब्रेस्ट कैंसर और मुंह का कैंसर बहुत विकराल रूप ले रहा है इसके लिए हमें तंबाकू, सिगरेट आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अगर यह बीमारी किसी के हो भी जाए तो उसे अपनी सोच को सकारात्मक रखना चाहिए। सकारात्मक सोच से ही वह कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी से लड़ सकता है।

साध्वीश्री ने कहा कि पहले के जमाने में लोगों का खान-पान बहुत सात्विक था। उनकी दिनचर्या सही थी। शुद्ध अनाज, शुद्ध दूध, शुद्ध दही सब कुछ शुद्ध था। आजकल सब चीजों में केमिकल होता है, वह हमारे शरीर में अनेक प्रकार की बीमारियों को उत्पन्न करता है जिसमें एक है कैंसर। इसके निवारण के लिए साध्वीश्री ने जाप को एक बहुत बड़ा माध्यम बताया।

## संक्षिप्त खबर

### 'माइक ड्रॉप' प्रतियोगिता का आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद सूरत के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल सूरत ने 'माइक ड्रॉप' प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में 25 प्रतिभागियों ने स्टैंड अप कॉमेडी, हेल्दी रोस्टिंग, जैन श्लोक और स्पीच जैसी विभिन्न श्रेणियों में भाग लिया। प्रथम स्थान रम्य मेहता, द्वितीय स्थान फेनिल संघवी, और तृतीय स्थान कारण मेहता को प्राप्त हुआ। तेरापंथ किशोर मंडल के एक्सिस सह प्रभारी ऋषि दुग्गड़, पूर्व टीकेएम एक्सिस प्रभारी विशाल पितलिया एवं ब्लू ब्रिगेड सदस्य मनन चोरडिया ने किशोरों को संघ सेवा में पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ लगे रहने, निरंतर आगे बढ़ने और नए-नए कार्यक्रमों का आयोजन करने की प्रेरणा दी। तेरापंथ किशोर मंडल सूरत के प्रभारी जय जीरावाला ने अपने वक्तव्य से सभी किशोरों में जोश भरा। भव्य बोथरा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की पूरी रचना और संयोजन KS30 के सदस्यों आर्यन बोथरा, शुभम बाफना, धैर्य नौलखा, और प्रक्षित ओस्तवाल ने की।

### मासखमण तप अभिनंदन

डोंबिवली। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में डोंबिवली में मासखमण तपस्वी दर्शन मेहता का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि जैन धर्म की तपस्या अपने आप में एक आदर्श है। तपस्या के विविध प्रकार हैं, नाना प्रकार की तपस्यायें देखने सुनने में आती हैं, परंतु हमारी तपस्या का मुख्य उद्देश्य आत्म शुद्धि कर्म निर्जरा है। जैसे-जैसे आत्मा की शुद्धि होगी कर्मों की निर्जरा होगी वैसे-वैसे आत्मविकास का पथ प्रशस्त होगा। दर्शन ने बड़े ही साहस का परिचय दिया है अन्यथा आजकल तो खाली-पीते भी चक्कर कमजोरी का क्रम बढ़ रहा है। इसने तपस्या में सामायिक, जप के साथ अच्छी धर्मांधना भी की, इस प्रकार की आडंबर रहित और साधना युक्त तपस्या प्रशंसनीय ही नहीं, सभी के लिए अनुकरणीय है। मुनिश्री ने स्वरचित गीत का संगान किया। तेयुप मंत्री संजय खाब्या ने भी स्वरचित गीत का संगान कर तप का वर्धापन किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन तेयुप अध्यक्ष भगवतीलाल कच्छारा ने किया।

### तप अभिनंदन समारोह

लाडनूं। वृद्ध सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में लाडनूं के ऋषभ द्वार प्रांगण में पचरंगी तप करने वाले भाई-बहनों का तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने तप अभिनंदन के रूप में गीतिका प्रस्तुत की। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश कोचर, तेरापंथ महिला मंडल की उप मंत्री राजश्री भुतोडिया, टीपीएफ के अध्यक्ष शोभन कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद लाडनूं के अध्यक्ष सुमित मोदी, पार्श्व रेणु कोचर ने तप अनुमोदन पर अपने विचार व्यक्त किये। साध्वी वृंद ने सामूहिक गीतिका के द्वारा तपस्वी भाई बहनों का तप अभिनंदन किया। साध्वी केवलयशा जी ने गीतिका के माध्यम से तप अभिनंदन किया। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने कहा कि जयाचार्य के समय से पचरंगी तप की परंपरा चलती आ रही है। जिन भाई बहनों ने पचरंगी तप किया है, वे आगे बढ़ने का प्रयास करें।

### कैंसर अवेयरनेस कार्यशाला

उदयपुर। अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में कैंसर अवेयरनेस कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी परमयशाजी ने स्वस्थ आहार और जीवनशैली के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हम आहार, विहार और निहार का संतुलन बनाए रखें। डॉ. रिची खाब्या ने सही आहार संयोजन की सलाह दी, जबकि डॉ. अमित बाबेल ने कैंसर के कारणों और रोकथाम पर चर्चा की। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सीमा बाबेल ने डॉक्टरों का स्वागत किया, और मंत्री ज्योति कच्छारा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन परिता पोरवाल ने किया।

## पृष्ठ 1 का शेष

### आचार्य श्री तुलसी का...

आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा और प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम की संयोजना में ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमार जी, मुनि रम्यकुमार जी का विशेष मार्गदर्शन और प्रेरणा रही। कार्यक्रम में दक्षिण गुजरात की सिटिलाइट, उधना, लिंबायत, पर्वत पाटिया, पांडेसरा, अड़ाजन, अमरोली, वराछा, बारडोली, बडौदा, चलथान, चिखली, डूंगरी, कामरेज, किम, नवसारी, पलसाना, सचिन, सायन, त्रिकमनगर, वलसाड, वापी आदि ज्ञानशालाओं के लगभग 1008 ज्ञानार्थी तथा 300 के करीब प्रशिक्षिकाओं की सहभागिता रही।

## पृष्ठ 3 का शेष

### सुरक्षित आत्मा भव...

जिसका मन चंचल होता है वह कभी अपने कार्यों में सफलता को नहीं प्राप्त कर सकता। श्वास प्रेक्षा व अनुप्रेक्षा से मन की चंचलता को कम किया जा सकता है। साध्वी स्तुतिप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मंगल प्रवचन के पश्चात् पूज्य प्रवर ने तपस्वियों को तपस्याओं का प्रत्याख्यान कराया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

### अनासक्ति, अपरिग्रह और...

पूज्य प्रवर के प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रेष्ठ लक्ष्य और पवित्र पुरुषार्थ की प्रेरणा देने वाली, मनुष्य जीवन को जागरूक करने वाली आगमवाणी है। मनुष्य भव को प्राप्त करने का लक्ष्य है पूर्व संचित कर्मों को खपाना, आत्मा को पवित्र बनाना। लोग्सस का छठा पद्य कीर्तन-वन्दन से प्रारंभ होता है और उत्तम समाधि पर विराम लेता है। कीर्तन में तीन शक्तियां कार्य करती हैं- पहली शब्द शक्ति, दूसरी मानस शक्ति और तीसरी भगवत शक्ति। ये तीन शक्तियां मिलकर एक महाशक्ति को प्रकट करती हैं। श्रद्धापूर्वक कीर्तन करने से वीतराग के गुण हम में भी प्रकट हो सकते हैं। मंगल प्रवचन व आख्यान के उपरान्त अनेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ कन्या मण्डल-सूरत ने चौबीसी के गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## पृष्ठ 2 का शेष

### आत्मा में रमण करना...

अनेक तपस्वियों ने आचार्य प्रवर से अपनी-अपनी तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तदुपरान्त आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अलंकरण एवं पुरस्कार सम्मान समारोह का समायोजन हुआ। इस संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश

डागा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। वर्ष 2024 के युवा गौरव पुरस्कार अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया को तथा आचार्यश्री महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार विपिन पितलिया को प्रदान किया गया। श्री कटारिया के प्रशस्ति पत्र का वाचन अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन माण्डोट एवं श्री पितलिया के प्रशस्ति पत्र का वाचन उपाध्यक्ष द्वितीय

जयेश मेहता ने किया। अलंकरण व पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने अलंकरण/पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को पावन आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप के महामंत्री अमित नाहटा ने किया। नेशनल रेलवे कमेटी मेम्बर छोटू भाई पाटिल ने आचार्यश्री का दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।



## संक्षिप्त खबर

### चित्त समाधि शिविर का आयोजन

टिटिलागढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ भवन टिटिलागढ़ में योग गुरु सुनील पंडा के प्रशिक्षण में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के जाप के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। बहनों के प्रेरणा गीत के संगान के बाद सुंदरी जैन ने मंगल भावना का अर्थ बताते हुए प्रयोग करवाये। अध्यक्ष बबीता जैन ने सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात योग गुरु सुनील पंडा ने प्रभावी तरीके से शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम विलोम, भ्रामरी और उद्गीत के प्रयोग करवाये एवं आत्मिक सुख के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाये। मुन्नी जैन ने अंग वस्त्र ओढ़ाकर एवं महिला मंडल ने मोमेंटो देकर सुनील पंडा को सम्मानित किया।

### संगठन यात्रा का आयोजन

चेंबूर। अभातेममं द्वारा साध्वी राकेशकुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल, चेंबूर की संगठन यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी राकेशकुमारी जी ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। चेंबूर महिला मंडल की अध्यक्ष मनीषा कोठारी ने सबका स्वागत किया। तत्पश्चात उपाध्यक्ष विशाखा बापना ने साध्वी प्रमुखाजी के संदेश का वाचन किया। अभातेममं कार्यसमिति सदस्य निर्मला चंडालिया ने महिला मंडल को रजिस्टर, कार्यसमिति सदस्य जूली मेहता ने नारी लोक एवं कन्या मंडल आदि के बारे में जानकारी देते हुए कार्यों के व्यवस्थित आयोजन हेतु प्रोत्साहित किया। प्रेमलता सिसोदिया ने महिलाओं की जागरूकता देखते हुए प्रश्न पूछे जिसके सभी बहनों ने संतोषजनक उत्तर दिये। साध्वी राकेशकुमारी जी ने अपने विचारों से महिलाओं और कन्याओं को जागरूक किया। महिला मंडल सह मंत्री डिंपल मेड़तवाल ने संचालन किया।

### संगठन यात्रा का आयोजन

कोयंबटूर। अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य एवं तमिलनाडु केरल प्रभारी माला कातरैला एवं अनीता बरडिया संगठन यात्रा हेतु कोयंबटूर पधारे। मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का सुमधुर संगान किया गया। अनीता बरडिया ने साध्वी प्रमुखाजी जी के संदेश का वाचन किया। स्थानीय उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा का संदेश वाचन किया। स्थानीय अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत व अभिवादन किया। ज्योति सुराणा एवं रुचिका बैद ने आगंतुकों का परिचय दिया। माला कातरैला एवं अनीता बरडिया ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चारों स्थाई योजनाओं के बारे में, स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अंतर्गत 7 सूत्रों, समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत कैसर जागरूकता अभियान के विषय पर जानकारी दी। इसके बाद जिज्ञासा एवं समाधान का सत्र रखा गया। कोयंबटूर महिला मंडल के द्वारा तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत सहयोग राशि प्रदान की गई। धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय मंत्री सुमन सुराणा ने दिया। इस कार्यक्रम का कुशल संचालन मीनू बोथरा ने किया।

### रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

दक्षिण मुंबई। अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन दक्षिण मुंबई में हुआ। संस्कारक अशोक बरलोटा ने विधि विधान एवं समुचित मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने का प्रशिक्षण दिया तथा सभी को अच्छे संस्कारों का जीवन जीने हेतु संकल्प करवाया। तेयुप अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया ने सभी के प्रति शुभकामनायें व्यक्त की। कार्यक्रम में परिषद् एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं और उनकी टीम की उपस्थिति रही।

## बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का विविध आयोजन

### अमराईवाड़ी-ओढव

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने कार्यशाला में पधारे हुए श्रावक समाज का स्वागत करते हुए कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साध्वी राहतप्रभा जी ने बारह व्रत पर गीतिका का संगान किया। साध्वी काव्यलता जी ने मंगल उद्बोधन देते हुए बारह व्रत के नियमों के बारे में विस्तार से समझाया। श्रावक समाज व्रत को स्वीकार करके, सीमा रखकर बारह व्रती श्रावक बन सकते हैं। छोटे छोटे संकल्प लेकर हम कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं।

### पूर्वांचल-कोलकाता

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा तुलसी वाटिका, लेकटाउन में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपासक सुरेन्द्र सेठिया ने श्रावक-श्राविका समाज को बारह व्रतों के महत्व और उनके पालन की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष नवीन सिंधी ने बारह व्रतों को श्रावक का गहना बताया, और कोषाध्यक्ष हर्ष सिरोहिया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए व्रत संकल्प पत्र भरने का आग्रह किया।

### साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण हावड़ा द्वारा किया गया। इस अवसर पर उद्बोधन देते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा भारतीय संस्कृति व्रत प्रधान संस्कृति है। व्रत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। व्रत जीवन का सुरक्षा कवच है। संयम में प्रवृत्त होने के लिए व्रत की उपयोगिता उपादेय है। भगवान महावीर ने दो प्रकार का धर्म बताया। अणगार धर्म व आगार धर्म। भगवान ने श्रावक के लिए 12 व्रतों का विधान किया है। उसे आगार धर्म कहा है। एक गृहस्थ भी बारह व्रतों के माध्यम से धर्म की आराधना कर सकता है, वह सुगति का अधिकारी बन सकता है। जैन धर्म के अनुसार मनुष्य श्रावक संख्यात है।

मुनिश्री ने आगे कहा- व्रत का अर्थ है- इच्छा का नियंत्रण। वउपभोक्तावादी संस्कृति में व्रतों में अनुष्ठान रखना अपने आप में श्रेष्ठ है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण उपाध्यक्ष पारस बरडिया ने व आभार सहमंत्री सुनीत नाहटा ने किया। संचालन मुनि कुणालकुमार जी ने किया।

### रायपुर

रायपुर के पटवा भवन में तेरापंथ युवक परिषद् ने 'बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला' का आयोजन किया। मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि जीवन में अनेक भटकाने वाले मार्ग होते हैं, इसलिए माता-पिता को अपनी संतान पर ध्यान देना चाहिए। बच्चों की संगत और उनके मित्रों का चित्र उनके चरित्र को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि बारह व्रत असंयम से संयम की ओर ले जाते हैं और इनका पालन करने वालों को बारह व्रती श्रावक-श्राविका कहा जाता है। मुनिश्री ने जीवन की सच्चाई और संतुलित दृष्टिकोण पर बल दिया, और कार्यशाला में मुनि नरेशकुमार जी ने प्रेरणादायक गीतिका प्रस्तुत की। कार्यशाला में अभय गोलछा,

विकास बरलोटा, पंकज बैद, गौरव दुगड़, और वीरेंद्र डागा जैसे लोग उपस्थित थे। मुनिश्री ने कहा कि हमारी नजर उपभोग पर नहीं, बल्कि उपयोग पर रहनी चाहिए। बारह व्रत की कार्यशाला सिर्फ प्रवचन का विषय नहीं है, बल्कि प्रयोग की भूमि है। इसमें आप जितनी भी छूट चाहें रख सकते हैं। भगवान महावीर ने दो मान्यताएँ अगार और अणगार धर्म का प्रतिपादन किया। बारह व्रत असंयम से संयम की ओर ले जाने वाला होता है।

### गांधीनगर, बेंगलुरु

अभातेयुप निर्देशित बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु गांधीनगर द्वारा तेरापंथ भवन गांधीनगर में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री ने कहा हर श्रावक-श्राविका को बारह व्रती बनना चाहिए। यह हमारे सम्यक्त्व दीक्षा के बाद दूसरी सीढ़ी है। साध्वीश्री जी ने एक-एक करके सभी बारह व्रतों की विस्तार से व्याख्या की। साधु को अकल्पनीय आहार-पानी ना बहराने, चौदह नियमों को हर दिन चितारने की प्रेरणा दी। कार्यशाला में लगभग 112 लोगों ने भाग लिया। कार्यशाला का सफल संयोजन रमेश सालेचा ने किया।

### नालासोपारा

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् नालासोपारा ने बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का सुन्दर आयोजन किया। प्रवक्ता उपासिका आशा गुंदेचा के नेतृत्व में, नालासोपारा से तीनों उपासिका बहनें, मंजू बाफना, प्रेमा धाकड़ और लक्ष्मी मेहता की उपस्थिति में कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलाचरण से की गई। तेयुप अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने कार्यशाला में पधारे हुए सभी श्रावक समाज का स्वागत, अभिनन्दन किया। प्रवक्ता उपासिका आशा गुंदेचा ने बारह व्रत के बारे में सभी को विस्तार से अध्ययन कराया एवं अलग-अलग व्रत के बारे में छोटी-छोटी कहानी सुनाकर उसके अच्छे और बुरे प्रभाव के बारे में समझाया। बारह व्रत कार्यशाला के संयोजक राजेश छाजेड़, तेयुप मंत्री दीपक वागरेचा ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यशाला को सफल आयोजन में तेयुप सहमंत्री पंकज खाब्या ने विशेष श्रम का नियोजन किया। तेयुप उपाध्यक्ष उमेश कोठारी ने आभार व्यक्त किया। कार्यशाला का सुंदर संचालन तेयुप संगठन मंत्री अर्पित ढालावत ने किया।

## श्रीमद् जयाचार्य के निर्वाण दिवस पर विशेष

### ● मुनि कमल कुमार ●

श्री जयाचार्य की गौरव गाथा गाएंगे।  
सादर- सविनय शत-शत शीश नमायेंगे। ध्रुव।।  
रोयट में जन्म सुहाया, था कल्लू मां का जाया।  
पिता आईदान का प्यारा, जन-जन का भाग्य जगाया।  
भला न पायेंगे।। 1।।

श्री भारीमाल से शिक्षा, श्री ऋषिराय कर दीक्षा।  
शास्त्रों की गहन समीक्षा, करते तज सकल प्रतीक्षा।  
सदा सुनायेंगे।। 2।।

अनुशास्ता तपसी ध्यानी, आगम के गहरे ज्ञानी।  
कुल डेढ़ मास में घर के, तर गए हैं चारों प्राणी।  
भाग्य सरायेंगे।। 3।।

जीवन था पावन निर्मल, थे जागरूक हर पल-पल।  
लेखक कवि दूरदर्शी थे, स्वाध्यायी प्रतिपल निश्चल।  
मिलजुल ध्यायेंगे।। 4।।

तर्ज: कर ले वास निवास



## सवा ग्यारह करोड़ का जप एवं छः पंचरंगी तप का आयोजन

### पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी की प्रेरणा से पीतमपुरा में पहली बार एक साथ छः पंचरंगी हुई। सवा ग्यारह करोड़ का भिक्खू स्वाम जप का महायज्ञ भी साध्वी वृन्द की प्रेरणा से चल रहा है, जिसमें लगभग नौ सौ व्यक्ति इस महायज्ञ में जप के द्वारा अपनी आहुति दे रहे हैं।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा- पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर हमें पीतमपुरा क्षेत्र बक्सिया। पीतमपुरा चोखले के भाई-बहनों की तप-जप एवं भगवत्वाणी से प्रीत लग गई है। ग्यारह करोड़ भिक्खुस्याम का जप अपने आपमें महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। यह छोटा

सा मंत्र आत्म उज्ज्वलता को बढ़ाने वाला, कर्म मल का शोधन करने वाला एवं विघ्न बाधाहारी एवं कल्याणकारी है। पंचरंगी तप अपने आप में विशिष्ट तप है। पीतमपुरा में पहली बार छः पंचरंगी एक साथ होना तपभक्ति की अभिव्यक्ति है। चातुर्मास तपस्या का सीजन है। तप की इस सीजन में तप-गंगा में अवगाहन कर आत्मा को पावन एवं पुनीत बनाएं।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने महावीर वाणी का सुधापान कराया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभाध्यक्ष लक्ष्मीपत भतोड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए।

## गायन प्रतियोगिता का आयोजन

### चिकमंगलूर।

बच्चों में संस्कार निर्माण के अनेक उपक्रमों में धार्मिक, आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं जीवन बोधि गीतों का अपना विशेष महत्व है। गीत के बोल, स्वर तथा उसकी तरंग जीवन को प्रतिबोधित करती है। चातुर्मास काल में ऐसे उपक्रम से नई पीढ़ी का साधु-सन्तों से जुड़ाव होता है। प्रतिभागी जब गीत के बोलों को गाते हैं तो वे स्वयं भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते हैं। मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य एवं मुनि भव्यकुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, चिकमंगलूर द्वारा गीत

गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 15 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं द्वारा गीतों की स्वरलहरियों ने जनमेदिनी को प्रभावित ही नहीं अपितु बोधित भी किया।

इस प्रतियोगिता में 15 वर्ष तक के 17 बच्चों ने हिस्सा लिया। जिसमें ख्याति गादिया, हर्षल गादिया ने प्रथम एवं पीयू गादिया, आयुषी गादिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तेरापंथ युवक परिषद चिकमंगलूर की और से सभी बच्चों को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत किया गया। निर्णायक की भूमिका करूणा गादिया ने निभाई। तेयुप मंत्री राकेश कावड़िया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापित किया।

## अणुव्रत भवन के द्वितीय तल का उद्घाटन

### नई दिल्ली।

अणुव्रत भवन के द्वितीय तल के पुनर्निर्माण की संपन्नता पर साध्वी कुन्दनरेखा के सान्निध्य में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के तत्वावधान में भव्य लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर कन्हैयालाल पटावरी द्वारा उद्घाटन किया गया, और साध्वी कुन्दनरेखा व अन्य साध्वियों ने मंगलपाठ किया।

प्रधान न्यासी के. सी. जैन ने अपने

भाषण में कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत हमारा रक्षा कवच है और यह भवन आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ एवं महाश्रमण जैसे महापुरुषों की चरण धूलि से पवित्र है। उन्होंने भवन के कक्षों का भी उल्लेख किया और बताया कि श्रावक समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस तल का निर्माण हुआ है।

मांगीलाल सेठिया ने सभी को बधाई दी, और अनिल अग्रवाल ने अणुव्रत भवन को घर जैसा बताते हुए तेरापंथ समाज की प्रशंसा की। सुखराज सेठिया

ने कहा कि अणुव्रत भवन दिल्ली का हृदय है और इसका नवीनीकरण तेरापंथ के विकास का प्रतीक है।

साध्वी कुन्दनरेखा ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है और विसर्जन का सूत्र अनासक्ति का संदेश देता है।

कार्यक्रम का संचालन शांति जैन ने किया और आभार ज्ञापन डालमचन्द बैद ने किया। साध्वी सौभाग्ययशाजी और साध्वी कल्याणयशाजी ने गीत प्रस्तुत किया।

## फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत स्वास्थ्य जागरूकता अभियान

### हैदराबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ने फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। अविनाश कॉलेज कुकटपल्ली, बशीरबाग एवम सिकंदराबाद शाखा में विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों के साथ जुम्बा और योगा का सत्र आयोजित किया गया जिसमें लगभग 300 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। फिटनेस ट्रेनर के रूप में स्नेहा नाहर ने अपनी सेवाएं दी। छात्रों ने काफी उत्साह के साथ सभी कार्यक्रम में भाग लिया। अविनाश कॉलेज के प्रिंसिपल एवम स्पोर्ट्स कॉर्डिनेटर ने तेयुप के प्रति आभार व्यक्त किया। नेक्सजेन फिटनेस अकादमी, अलवाल

में आयोजित कार्यक्रम में ट्रेनर के अहमप्रभाजी ने सभी को प्रेक्षाध्यान रूप में नेक्सजेन से नवीन एवम करवाया। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन सौम्या ने सेवाएं दी। कार्यक्रमों की श्रृंखला में साइक्लोथोन का कार्यक्रम भी पाला पिट्टा साइक्लिंग पार्क कोंडापुर में रखा गया। जिसमें अच्छी संख्या में युवकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हॉटफुट बेगमपेट में आयोजित कार्यक्रम में आशीष कोठारी ने ट्रेनर की भूमिका में सदस्यों को कई तरह की कसरत करवाई।

इसी कड़ी में अगला कार्यक्रम शासन साध्वी शिवमालाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में रखा गया। साध्वी

अहमप्रभाजी ने सभी को प्रेक्षाध्यान रूप में नेक्सजेन से नवीन एवम करवाया। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने बताया कि फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत स्वास्थ्य जागरूकता को लेकर तेयुप हैदराबाद में कई कार्यक्रम कर रही है। मंत्री अनिल दुगड़ ने इस प्रकार के कार्यक्रम में सभी से जुड़ने की अपील की।

मुख्य संयोजक के रूप में अमृत भंसाली, आशीष कोठारी, राहुल दुगड़, विशाल नौलखा, दीपक बोथरा, संदीप शेखानी ने अथक परिश्रम से सभी कार्यक्रमों को सफल बनाया।



## डिजिटल डिटॉक्स पंचरंगी का भव्य आयोजन

### गांधीनगर, बैंगलोर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन गांधीनगर बैंगलोर में डिजिटल डिटॉक्स पंचरंगी का शानदार आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने फरमाया इंसान की सोच पर भौतिकता का पर्दा डालने वाले डिजिटल गेजेट्स का अनावश्यक उपयोग रोकना आवश्यक है। साध्वी श्री की प्रेरणा से कई श्रावक-श्राविकाओं ने 5-4-3-2-1 दिन तक मोबाइल का प्रयोग न करने का संकल्प लिया। साध्वी

भव्ययशा जी ने कुछ प्रयोगों के माध्यम से बताया कि हमारी आँखें एक दिन में करोड़ों रंग देखती हैं उतनी ही हमारी शक्ति खर्च होती है। उन्होंने कुछ विशेष प्रयोगों के माध्यम से सीमन्धर स्वामी के साथ तादात्म्य जोड़ने का अभ्यास कराया। श्वास के माध्यम से फेफड़ों की एक्टिविटी के बारे में बताया।

साध्वी संगीतप्रभा जी, साध्वी भव्ययशा जी, साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने 'डिजिटल डिटॉक्स पंचरंगी कराई' गीतिका तथा तपस्विनी बहन हेमा पोरवाड़ की 31 की तपस्या पर अनुमोदना में गीतिका प्रस्तुत की।

## मेरी शक्ति-मेरी माँ

इरोड। मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में 'मेरी शक्ति-मेरी माँ' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। मुनि रश्मिकुमार जी ने माँ पर आधारित मधुर गीत 'माता भगवान होती है' से कार्यशाला का शुभारंभ किया। मुनिश्री ने कहा कि माँ ममता की मूरत, समता की सूरत होती है। मुख्य वक्ता निधि कोठारी (सहमंत्री, महेश्वरी महिला मंडल, इरोड) ने माँ के धैर्य, शक्ति और वात्सल्य पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने 'माँ का दिल' पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की।

## आयम्बिल तप एवं अनुष्ठान

### कांदीवली।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल कांदीवली के तत्वावधान में आयम्बिल तप एवं जप का भव्य अनुष्ठान आयोजित हुआ। सैंकड़ों भाई-बहनों ने इस अनुष्ठान में संभांगिता दर्ज की। इस अवसर पर साध्वी श्री ने कहा कि भगवान महावीर ने कहा है हमारी शरीर धर्म साधना का महत्वपूर्ण आलम्बन है। इस शरीर के द्वारा ही ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना की जाती है। कर्म बन्धनों को तोड़ने का सशक्त माध्यम है हमारा शरीर। इसलिए कहा जाता है कर्म करते समय हमेशा जागरूक रहना चाहिए। वर्तमान के पुरुषार्थ

से अशुभ कर्म को शुभ में परिवर्तित किया जा सकता है। कर्मों को हल्का करने की अनेक साधना है। आयम्बिल अनुष्ठान एक विघ्न विनाशक शांति प्रदायक आनन्द प्रदायक साधना है। साध्वीश्री ने आगे कहा- अध्यात्म विकास के लिए समय-समय पर तप-जप के अनुष्ठान आवश्यक हैं। शरीर स्वास्थ्य की दृष्टि से भी संयम की यह साधना उत्तम है। साध्वीश्री ने सम्पूर्ण परिषद् को विविध मंत्रों के साथ अनुष्ठान करवाया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'आत्म साधना का आलम्बन करे शक्ति संचार' गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल कांदीवली की अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।



## ज्ञानशाला दिवस पर विविध आयोजन

### जोरावरपुरा

तेरापंथ भवन जोरावरपुरा में साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। साध्वी श्री ने कहा कि बच्चों का आध्यात्मिक विकास ज्ञानशाला से ही संभव है। साध्वीश्री ने अनेक दृष्टान्तों के द्वारा बच्चों के विकास के लिए ज्ञानशाला का महत्व बताया। साध्वी कांतप्रभाजी ने भी बताया कि बच्चों में सुसंस्कारों की नींव ज्ञानशाला के माध्यम से ही रखी जा सकती है। साध्वीश्री जी ने चातुर्मास के बाद भी ज्ञानशाला जारी रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल से मुस्कान पुगलिया ने किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने कव्वाली, नृत्य आदि अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने भी ज्ञानशाला दिवस पर अपने विचार रखते हुए बताया कि बच्चे एक बीज के समान होते हैं जिन्हें एक अच्छी भूमि और अच्छे किसान की आवश्यकता होती है, तभी वह बीज आगे चलकर एक बड़ा वट वृक्ष बन सकता है। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा ने भी अपने भाव प्रकट किए। महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। जोरावरपुरा महिला मंडल द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए।

### डोंबिवली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का शुभारंभ रैली द्वारा किया गया जिसमें सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला गीत से मंगलाचरण हुआ। मुख्य प्रशिक्षक अनिता विनायकीया ने स्वागत किया। सभा अध्यक्ष दलपत इंटोदिया ने अपने विचार रखे। 'विवेक खोया-मानव रोया' मोबाइल डिटॉक्स पर ज्ञानशाला के बच्चों की प्रस्तुति रही। मुनिश्री ने कहा कि

अच्छे बच्चे वे होते हैं जो शालीनता का परिचय देते हैं। बच्चों से पहले माता-पिता स्वयं को अनुशासित करें, बच्चों को इस दुष्प्रभाव से बचाएं। मकान, संस्थान इन सबसे पहले व्यक्ति की संतान अनुशासित हो। मुनिश्री अभय दान, ज्ञान दान और पात्रदान के बारे में जानकारी प्रदान की। बच्चों के सर्वांगीण विकास में प्रशिक्षिकाओं के निस्वार्थ योगदान की सराहना की।

### चिकमगलूर

चिकमगलूर ज्ञानशाला के 25 वर्ष की संपूर्ति के अवसर पर रजत वर्ष उत्सव कार्यक्रम का सफल आयोजन मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। चिकमगलूर तथा समस्त मलनाड क्षेत्र के ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। दो दिवसीय ज्ञानशाला रजतवर्ष के प्रथम दिन मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्यकुमार जी मुनि जयेश कुमार जी ने ज्ञानार्थियों को सम्बोधित किया। रजत उत्सव में विशेष कक्षा पूनम नवीन गादिया ने ली। स्वागत क्रम में मुख्य प्रशिक्षिका अनीता गादिया ने आगन्तुक प्रशिक्षिकाओं, ज्ञानार्थियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। पूरे समाज से सराहनीय सहभागिता रही।

### कोयंबटूर

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस, एक दिवसीय शिविर और ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा मुनि दीपकुमार जी के द्वारा करवाई गई। ज्ञानार्थियों के द्वारा मंगलाचरण हुआ। कार्यक्रम में ज्ञानशाला की मनोरंजक प्रस्तुतियां रही। जिनमें ज्ञानार्थियों ने महावीर, भिक्षु, तुलसी एवं महाप्रज्ञ अष्टकम, तीर्थंकर वंदना, 'एबीसीडी- चढ़ो सफलता की सीढ़ी'

आदि विषयों पर भावभरी प्रस्तुतियां दी। छः लेश्या पर ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा प्रेरक नाटक प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला तेरापंथ सभा का महत्वपूर्ण उपक्रम है। स्थानीय तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोत ने सभी ज्ञानार्थियों को नियमित आने के लिए प्रेरणा दी। सभा के मंत्री अजय बुच्चा ने अपने विचार रखते हुए समाज को आह्वान किया कि बच्चों को ज्ञानशाला भिजवाएं जिससे बच्चों में धार्मिक संस्कार आए। मुनि दीपकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा- यह गुरुदेव तुलसी का महत्वपूर्ण अवदान है, इससे भावी पीढ़ी संस्कारवाने बने। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका दीपिका बोथरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला शिविर के प्रथम चरण का संयोजन ज्ञानशाला संयोजक कनक बुच्चा ने किया। द्वितीय चरण में ज्ञानार्थियों को धार्मिक हाउजी गेम खिलाया गया, बच्चों ने इसमें बड़े उत्साह से भाग लिया और भी कई गेम्स खिलाए गए। द्वितीय सत्र का संयोजन पूर्व ज्ञानशाला प्रभारी स्नेहलता नाहटा, रूप कला भंडारी ने किया। तृतीय सत्र में मुनि दीपकुमार जी ने उद्बोधन देते हुए बच्चों को कहानी के माध्यम से यह प्रेरणा दी कि हमें विद्या, विवेक और विनय को धारण करना चाहिए। मुनि काव्यकुमार जी ने कहानी के माध्यम से प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं सुरेखा सेमलानी और विजयलक्ष्मी बाफना ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए ज्ञानार्थी गण को प्रमाण पत्र वितरण करवाए। श्रेष्ठ ज्ञानार्थी का पुरस्कार तनिष्क बाफना को प्राप्त हुआ। सर्वाधिक उपस्थिति का पुरस्कार प्रत्यक्ष चौरडिया व प्रशिक्षिका स्नेहलता नाहटा को मिला। तेरापंथी सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोत, युवक परिषद अध्यक्ष योगेंद्र सेठिया व टीम का सहयोग रहा।

प्रशिक्षिका सरला बोहरा, भावना मंडोत, संगीता गुनेचा, सविता भंडारी, प्रेमलता बोहरा, शोभा बुच्चा, विजया बोहरा के पूर्ण सहयोग से ज्ञानशाला दिवस, एक दिवसीय शिविर एवं ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम सफलता से संपन्न रहा।

### इंदौर

साध्वी रचनाश्रीजी ने ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के दूरदर्शी आचार्यों ने देखा कि नींव को मजबूत बनाना जरूरी है। यदि नींव मजबूत है तो उस पर कई मंजिला इमारत खड़ी हो सकती है। आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी और आचार्य श्री महाश्रमणजी ने नींव को मजबूत किया है और कर रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे भविष्य के समाज की नींव हैं। ज्ञानशाला उनमें अच्छी आदतों का निर्माण करता है। ज्ञानशाला में ज्ञान का प्रकाश और कषाय के उपशम का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि जीवन रूपी गाड़ी सुचारू रूप से चल सके। सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, उर्मिला घीया, अंजू कठोटिया, ज्योति छाजेड़, मनीष दुगड़ ने अपने भाव व्यक्त किए। पलासिया भवन व जंगमपुरा भवन में संचालित ज्ञानशाला की कक्षाओं में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले ज्ञानार्थी और प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण मुख्य प्रशिक्षिका मधु फलोदिया ने किया। विद्यार्थियों के द्वारा अनेक ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियां दी गईं। बच्चों ने 'ज्ञानशाला की यह शिक्षा, पर्यावरण की करें सुरक्षा' नाटक की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिकाओं ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

### कांदिवली

तेरापंथ भवन कांदिवली में साध्वी डॉ मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कांदिवली, गोरेगांव, जोगेश्वरी और मलाड की ज्ञानशालाओं ने उत्साह के साथ ज्ञानशाला

दिवस मनाया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा- भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में बहुश्रुत पूजा अध्ययन में ज्ञान प्राप्ति में बाधक पांच तत्वों का उल्लेख किया है। पहला बाधक तत्व है- अहंकार। ज्ञान ग्रहण के लिए विनम्र होना आवश्यक है। क्रोध स्वभाव भी ज्ञान प्राप्ति में बड़ा बाधक है, इस स्थिति में ज्ञान चेतना आवृत्त हो जाती है। प्रमादी व्यक्ति समय का मूल्य नहीं समझता, वह ज्ञान की दिशा में बढ़ ही नहीं सकता। ज्ञान प्राप्त करने के लिए आलस्य को तिलांजलि देनी होगी, जागृत चेतना वाला ही ज्ञान का समयक अर्जन कर सकता है। रोगी व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने में अक्षम होता है। स्वस्थ वह होता है, जिसका भोजन पर अनुशासन होता है। ज्ञानार्थियों को विशेष प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा- जंक फूड आदि के सेवन से शरीर का पाचनतंत्र प्रभावित होता है, इसलिए इससे बचने का प्रयास हो। इसके साथ ही अपथ्य और अतिभोजन भी वर्जनीय है। ज्ञान विकास के लिए स्वावलम्बन जरूरी है। ज्ञानवृद्धि अनुष्ठान में संभागी ज्ञानार्थियों एवं परिषद को ज्ञान प्राप्ति में सहायक तत्वों की चर्चा करते हुए सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक टिप्स साध्वीश्री द्वारा प्रदान किए गए। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिका परिवार के संगान से हुआ। डालगणी जोन संयोजिका सेजल चौरडिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी वृंद ने गीत का सामूहिक संगान किया। बच्चों द्वारा 'आचार्य महाप्रज्ञ सूपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल' का विशेष आयोजन दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र रहा। इस आयोजन में पांच क्षेत्रों की नौ ज्ञानशालाओं ने डॉक्टर की भूमिका अदा करते हुए, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों के निदान के लिए समाधान बताए। सहसंयोजिका मोनिका चोपड़ा ने आभार ज्ञापन किया एवं कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रशिक्षिका संगीता इंटोदिया ने किया।

## जीवन निर्माण कार्यशाला में शुभ भविष्य निर्माण के सूत्रों की व्याख्या

### गंगाशहर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में विद्यार्थियों के जीवन निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर ने विजय गीत से की। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा गंगाशहर के निवर्तमान अध्यक्ष अमरचन्द्र

सोनी ने दिया। आयोजन प्रभारी जैन लूणकरण छाजेड़ ने कहा कि विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल बने। हर नया दिन हमें एक नई शुरुआत करने का अवसर देता है। जब हम भविष्य की बात करते हैं, तो हमारे सामने कई चुनौतियां और संभावनाएं होती हैं। परंतु, यह हमें तय करना होता है कि हम इन चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं और इन संभावनाओं

को कैसे साकार करते हैं। साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को जापान में पाई जाने वाली एक प्रकार की मछली के उदाहरण के साथ बताया कि उसे जितने साईज के टब या तालाब में या समुद्र में रखें वह उसी के बराबर अपने शरीर को विस्तार दे देती है। उसी प्रकार आपके भीतर भी अनन्त क्षमताएं हैं,

आप जो चाहो वो पा सकते हो। आपका संकल्प मजबूत है तो सब कुछ है। आप सब अपने आप में यूनिक हैं, बस लक्ष्य निर्धारित करें और उसे अनुरूप आगे बढ़ें। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि आपको अपना फ्यूचर ब्राइट बनाना है तो अपना नजरिया अलग रखना होगा। संसाधन कम हो या ज्यादा यह मायने नहीं रखता, आपका नजरिया

और आपका काम डिफरेंट हो। काम ऐसा करो कि काम से आपकी पहचान बन जाए। समाज, परिवार, आपके दोस्त व हर व्यक्ति के दिल से आपका नाम आए। साध्वी श्री ने सुनहरे भविष्य के लिए तीन सूत्र दिए - सी डिफ्रेंटली, स्पीक डिफ्रेंटली, एक्ट डिफ्रेंटली। साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।



# सधन साधना शिविर

एक कदम आत्मोत्कर्ष की ओर...



## नियमोपनियम

- 10 से 45 वर्ष के पुरुष और 10 से 40 वर्ष की कन्याएं ही संभागी बन सकते हैं।
- शिविर आवासीय होगा।
- शिविर सामान्यतः चारित्रात्माओं की देख-रेख में होगा।
- सामान्यतः नवकारसी अनिवार्य होगी।
- ब्रह्मचर्य का पालन।
- असत्य का वर्जन।
- मोबाइल आदि सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का वर्जन।
- सामान्य घड़ी रख सकते हैं। स्मार्टवॉच नहीं।
- ए.सी., कूलर, हीटर वर्जन।
- लाईट आदि स्वयं न चलाना।
- भूमि शयन।
- सचित्त वर्जन, फ्लश आदि के अतिरिक्त।
- ईर्या समिति का पालन एवं शिविरकालीन जीवन स्वावलंबी हो ऐसा प्रयास।
- रात्रिभोजन वर्जन।
- दिन-रात्रि में प्रायः सामाधिक में रहना।
- संवरपूर्वक शयन।
- उपकरणस्वरूप
  - श्वेतवस्त्र।
  - अधिकतम चार जोड़ी वस्त्र से ज्यादा नहीं।
  - स्वयं की सामाधिक किट।
  - पर्सनल किट।
- भोजन सादा एवं साधनानुरूप।
- स्वयं के पात्र अन्य से साफ न करवाएं।
- विशेष रोग से पीड़ित जो स्वावलम्बी न हो, वे इस शिविर में संभागी नहीं बन सकेंगे।

## संपर्क सूत्र

पुरुष वर्ग के लिए : प्रकाश डाकलिया- +91 6354281891  
कन्या वर्ग के लिए : मधु देरासरिया- +91 9427133069

## सधन साधना शिविर

2-10 नवम्बर 2024

पावन सान्निध्य : युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

आयोजक : जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

स्थान : भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, वेसू, सूरत

## आवेदन पत्र

नाम : .....

○ पुरुष ○ स्त्री

जन्मतिथि : .....

पता : .....

मोबाइल नं. : .....

ईमेल : .....

मैं सधन साधना शिविर में संभागी बनना चाहता/चाहती हूँ। मैं शिविर के नियमोपनियम का सजगता के साथ पालन करूंगा/करूंगी।

दिनांक

हस्ताक्षर

## कन्यामंडल का गठन

जोरावरपुरा। 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखा जी की प्रेरणा से जोरावरपुरा कन्यामंडल का गठन हुआ जिसमें पन्द्रह कन्याओं की उपस्थिति रही।

साध्वीश्री जी ने कहा कि यह कन्यामंडल कालूगणी का ही प्रताप है। कालूगणी ने जब आचार्यश्री तुलसी का युवाचार्य बनाया तब साध्वी शिक्षा व चित्त समाधि पर ध्यान देने के लिए कहा। गुरु का वचन निभाने वाले उनके शिष्य ही होते हैं।

आचार्यश्री तुलसी ने अपने गुरु वचनों का साकार करते हुए महिलाओं की घूंघट प्रथा को हटाते हुए कहा कि युग बदल रहा है। उनका सपना था कि महिलाओं को भी जगाना है। आगे विकास के पथ पर बढ़ना है।

साध्वीश्री ने सभी कन्याओं को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वी शीतलयशा जी ने बताया कि जिस व्यक्ति में सभ्यता, संस्कृति और सहिष्णुता हो वो अपने जीवन में बहुत आगे जा सकता है। हमारी जैन संस्कृति यदि कायम रहे तो एक कन्या एक अच्छी महिला बन सकती है। जिस प्रकार नदी एक छोटे से स्रोत से शुरु होकर बहुत बड़ी बन जाती है उसी प्रकार व्यक्ति में अगर संयम साधना हो तो वह भी अपने जीवन में आगे बढ़ सकता है। महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से करते हुए अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वीश्री जी की अथक प्रेरणा से आज जोरावरपुरा में कन्यामंडल का गठन हुआ। कन्यामंडल द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई।

## रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

लाडनूं। अभातेयुप के निर्देशन में लाडनूं के ऋषभ द्वार में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी प्रमिलाकुमारीजी के मंगल पाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। जैन संस्कारक राजेश बोहरा ने विधिपूर्वक कार्यशाला संपन्न कराई, जिसमें महिला मंडल और ज्ञानशाला के बच्चों ने भाग लिया। सभी बहनों ने भाइयों को तिलक लगाकर जैन संस्कार विधि से राखी बाँधी।

आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष सुमित मोदी ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न मंडलों के सदस्य और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रायोजक पुष्पलता चौरडिया परिवार लाडनूं निवासी सिलचर प्रवासी रहे।

## पृष्ठ 20 का शेष

### अभातेयुप धार्मिक दृष्टि से...

इंद्रियों में अवरोध डाल दें तो विषयों से दूर हो सकते हैं। ध्यान में भी हम इंद्रियों के प्रयोग का निरोध करते हैं।

दुनिया में रहते हुए भी राग-द्वेष मुक्त रहने का प्रयास करें, ज्ञाता द्रष्टा भाव रहे। शब्द कान में पड़े, उसके प्रति राग-द्वेष न हो। आंख से देखने के बाद भी राग-द्वेष न हो, भोजन किया, किन्तु उसके प्रति राग-द्वेष न हो। राग-द्वेष की रजें विषयों के साथ ना जुड़े, यह इंद्रिय संयम की साधना है। आसक्ति के कारण आदमी इंद्रिय विषयों का सेवन करता है, आत्मा का नुकसान तो करता ही है, शरीर का भी नुकसान करता है। अपनी आत्मा के कल्याण और जीवन को दुःख से मुक्त बनाने के लिए इंद्रियों की साधना करने का प्रयास करना चाहिए। साधक साधना करता है तो राग-द्वेष मुक्त हो सकता है। चातुर्मास में अनेक तपस्याएं हो रही हैं, यह भी रसनन्द्रिय का निरोध हो जाता है। भूख को सहना भी अच्छी साधना है। पारणे

में भी राग-द्वेष मुक्त रहने का प्रयास हो। हमें इंद्रियों के प्रति निरोध और राग-द्वेष मुक्ति दोनों का यथायोग्य प्रयास करना चाहिए। मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्य प्रवर ने मुनि गजसुकुमाल के आख्यान का वाचन किया। अनेक तपस्वियों ने श्रीमुख से तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 58वें वार्षिक अधिवेशन के संदर्भ में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अभातेयुप के आयामों की विस्तृत जानकारी देते हुए प्रतिवेदन पूज्य प्रवर को निवेदित किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह गण गुणरत्नों की खान है। तेरापंथ युवक परिषद् आस्थाशील, श्रद्धाशील समर्पित कार्यकर्ताओं के निर्माण का कारखाना है। चाहे प्रसंग स्व साधना का हो, समाज हित का हो, राष्ट्रहित का हो, हर क्षेत्र में यह

संगठन सदैव अपनी भूमिका निभाता है। भारत सरकार का विश्वास भी इस संगठन पर बढ़ा है।

बेंगलुरु दक्षिण के सांसद व भाजपा युवामोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को वंदन कर अपने वक्तव्य में कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपके दर्शन करने व आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला है। भारत की आत्मा आध्यात्मिक परंपराओं से जुड़ी हुई है और इसमें साधु-संतों के आशीर्वाद और गुरु परंपरा का बड़ा महत्त्व है। भारत को हमेशा भारत बनाए रखने की जिम्मेदारी युवाओं की है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने युवकों को संबोधित करते हुए कहा कि युवावस्था में ऊर्जा, समय, और दृष्टिकोण (विजन) तीनों होते हैं, इसलिए यह प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण समय है। युवक परिषद का उद्देश्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सम्यक दर्शन, ज्ञान, चरित्र, और तप की आराधना के माध्यम से दुखों से

मुक्ति प्राप्त करना है। परिषदें भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला, बारह व्रतों की कार्यशालाओं, और त्यागी थर्सडे जैसे लोकोत्तर कार्यक्रमों के साथ लौकिक कार्य भी करती है। हमारे युवक ज्ञान संपन्न बनें, संस्कार संपन्न बनें, तत्वज्ञान को समझने का प्रयास करें और ऐसे प्रबुद्ध युवक तैयार हो, जिनके बारे में कहा जा सके कि यह युवक जैन दर्शन, तेरापंथ दर्शन का ज्ञाता है। मंगल प्रवचन के उपरान्त अनिल बैद (गुडगांव) को अभातेयुप द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन माण्डोट ने किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ता अनिल बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया तथा पुरस्कार सम्मान समारोह कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप के महामंत्री अमित नाहटा ने किया।



# भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला

## अमराईवाड़ी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेयुप, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा आयोजित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। तेयुप के उत्साही सदस्य अल्पेश हिरण एवम पंकज डांगी ने विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कैलाश बाफना ने किया।

तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य देते हुवे अपने विचार

व्यक्त किये। मुख्य वक्ता के रूप में पधारी सीपीएस ट्रेनर मिनी कोठारी ने अनेक उदाहरण के साथ भिक्षु स्वामी के विचार एवं तेरापंथ धर्म संघ के मौलिक सिद्धांत पर आधारित अपने विचार विस्तृत रूप से व्यक्त किये। तेयुप अमराईवाड़ी-ओढव के शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा ने भिक्षु स्वामी को मैनेजमेंट गुरु बताते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

साध्वी सुरभिप्रभा जी एवं साध्वी राहतप्रभा जी ने सुंदर गीतिका द्वारा समग्र माहौल भिक्षुमय बना दिया। साध्वी काव्यलताजी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ को जानना है तो हमें भिक्षु स्वामी के

विचारों को समझना होगा तथा भिक्षु स्वामी को जानना है तो तेरापंथ धर्मसंघ के मौलिक सिद्धांतों को समझना होगा। साध्वीश्री ने तेरापंथ के मौलिक सिद्धांतों की विस्तृत चर्चा की।

आचार्यश्री भिक्षु के बारे में अनसुनी किस्से बताते हुए उनके विचारों को सुंदर तरीके से समझाया। साध्वी श्री द्वारा श्रावक समाज को 'भिक्षु विचार दर्शन' पुस्तक के नियमित स्वाध्याय का संकल्प दिलाया गया।

आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सुनिल चिप्पड़ ने एवं संचालन निवर्तमान अध्यक्ष हितेश चपलोत ने किया। कार्यशाला में लगभग 150 सदस्यों की उपस्थिति रही।

## आध्यात्मिक अनुष्ठान का भव्य आयोजन

गांधीनगर। तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में रवि पुष्य नक्षत्र के विशेष अवसर पर ३० अ. भी. रा. शि. को नमः के सामूहिक जाप के माध्यम से ऊर्जा संवर्धन का प्रयोग कराया गया। साध्वी उदितयशा जी ने पांचों ऋषियों के जीवन से जुड़े रोमांचक प्रसंग बताते हुए उनके तप की तालिका को प्रस्तुत किया। जयाचार्य द्वारा रचित विघ्न हरण की ढाल का सामूहिक संगान किया गया।

साध्वी भव्ययशाजी ने पिरामिड कवच का निर्माण करवाया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी एवं साध्वी भव्ययशा जी ने जप का प्रयोग करवाया। सहाड़ा के विधायक लादूलाल पितलिया, सिरियारी भिक्षु समाधि स्थल संस्थान व मानव हितकारी शिक्षण संस्थान के उपाध्यक्ष पीयूष गोगड़ उपस्थित थे। संचालन विनोद छाजेड़ ने किया।

## रिश्ते व शीशे होते हैं नाजुक

### मंडिया।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में 'How to Build a Strong Relationship' कार्यशाला का आयोजन किया गया। आज की युवापीढी अपने रिश्तों को मधुर कैसे बनाए इस विषय पर साध्वी संयमलताजी ने कहा- स्वास्थ्य के बिना शरीर व प्राण अधूरे हैं, वैसे ही परिवार के बिना जीवन अधूरा है। परिवार में अनेक व्यक्ति मिलकर एक छत के नीचे त्याग, समर्पण व कर्तव्य की भावनाओं को मजबूत करते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा रिश्ता व शीशा दोनों नाजुक होते हैं फर्क सिर्फ इतना होता है कि शीशा गलती से टूटता है व रिश्ता गलतफहमी से। हम रिश्तों में

जुड़ाव व प्रेम रखें। प्राचीन समय में पत्तों में खाना खाते तो रिश्ते हरे-भरे रहते थे, मिट्टी में खाते तो जमीन से जुड़े रहते थे। आज के रिश्ते थर्माकोल जैसे हैं, यूज एंड थ्रो वाले हो गए हैं। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत कन्या मंडल ने की। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कुशल संचालन करते हुए कहा- संसार रिश्तों का पुलिंदा है। हर रिश्ते की अपनी वैल्यू है। रिश्ते की बुनियाद है आज की युवापीढी।

रिश्तों में हुई गलतियों को मिट्टी पर लिखकर उसे भूल जाएं और रिश्तों की मधुर बातें पत्थरों पर लिखकर उसे मजबूती प्रदान करें। मंड्या कन्या मण्डल ने अधिवेशन में तीन पुरस्कार व दो सर्टिफिकेट जीते, तेरापंथ संभा द्वारा कन्याओं को प्रोत्साहित किया।

## कल्याण मित्र- सच्चा पथदर्शक बनकर सही मंजिल तक ले जाता है

### कांदिवली, मुंबई।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली एवं मलाड मलाड के तत्वावधान में कल्याण मित्र कार्यशाला तेरापंथ भवन कांदिवली में आयोजित हुई।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल परिषद् को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- संस्कृत साहित्य में सच्चे मित्र के संदर्भ में कहा गया है- जो मित्र अपने हितैषी मित्र को गलत काम से रोकता है, मित्र के हित का चिन्तन करता है, मित्र की रहस्य की

बात गुप्त रखता है, विपत्ति के समय मित्र का साथ नहीं छोड़ता, अपितु समय, श्रम और धन देने में हिचकिचाता नहीं, उसे अच्छी सीख देता है, मित्र के गुणों को प्रकट करता है, वह सच्चा कल्याण मित्र होता है।

साध्वीश्री ने कहा- इस अवसर पर मैं यह कहना चाहूंगी- अभिभावक गण प्रारम्भ से ही जागरूक रहें। गलत दिशा की ओर यदि बच्चे जा रहे हैं तो उन्हें रोकने का प्रयास करें। कल्याण मित्र-सच्चा पथदर्शक बनकर सही मंजिल तक ले जाता है। इस अवसर पर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त कोलकाता प्रवासी कल्याण

मित्र गोयल परिवार का साध्वीश्री जी ने उल्लेख किया। साध्वीश्री जी ने कहा उपस्थित परिषद् ध्यान दें- अपनी भावी पीढी को संतजनों के सान्निध्य में लाएं, ताकि उन्हें अच्छे संस्कार मिले।

इस अवसर पर साध्वी शौर्य प्रभाजी ने कहा- कल्याण मित्र बनाते समय उसका एमआरआई अवश्य टेस्ट करे। एम यानि मोर क्वालिफाइड, आर यानि रियलिस्टिक जो वास्तविक दुनिया से जोड़ा रखे, आइ अर्थात् जो आदर्श हो। साध्वी वृंद ने सामूहिक संगान किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

## बोलती किताब

### आनंद को भीतर से जगाएं



एक व्यक्ति ने पूछा- आज के युग की सबसे बड़ी बीमारी क्या है ? मैंने (आचार्य महाप्रज्ञ) कहा- कोरा वैज्ञानिक होना और आध्यात्मिक न होना वर्तमान युग की सबसे बड़ी बीमारी है। व्यक्ति की इसी मनोवृत्ति ने बहुत सारी बीमारियों को जन्म दिया है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व वैज्ञानिक भी हो और आध्यात्मिक भी यह युगीन समस्याओं का सबसे बड़ा समाधान है। इसकी संपूर्ति का माध्यम है प्रेक्षाध्यान।

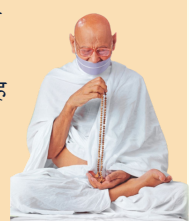
कब सधता है ध्यान - ध्यान के लिए इन्द्रियों की सीमा को लांघना आवश्यक है। ध्यान वही व्यक्ति कर सकता है, जो इन्द्रिय, मन और बुद्धि की सीमा को तोड़कर प्रज्ञा की सीमा में प्रवेश कर जाता है।

स्वयं को देखना - यह सत्य है, जहां समाज है वहां दूसरों को देखे बिना काम नहीं चलता, किंतु इससे भी बड़ा सच है, जो व्यक्ति अपने प्रति जागरूक नहीं होता, वह दूसरों के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं कर सकता।

भीतरी आनंद जगाएं - हम आनंद को भीतर से जगाएं। हम ज्ञान के आंतरिक स्रोत को प्रकट करें। हमें यह निश्चित करना है कि हमें व्यावहारिक जीवन-यात्रा को चालू रखते हुए भी हमें उस महास्रोत पर चले जाना है, जो असीम है, अनंत है।

बदलाव भी संभव - आदमी भीतर से बदलता है, इसका अर्थ है वह बाहर भी बदल जाता है। हम इस सच्चाई को जानें, आदमी विचार के स्तर पर नहीं बदलता। विचार का स्तर बहुत गहरा नहीं है। जब तक हम भीतर की चेतना तक नहीं जाएंगे। तब तक बदलने की बात संभव नहीं बन पाएगी।

सफलता निश्चित है - हमारे भीतर बहुत आकांक्षाएं जगती हैं- यह हो जाए, वह हो जाए, यह करूं, किंतु हम यह भी देखें हमारी क्षमता कितनी है, हमारा पुरुषार्थ कितना है। यह देखना अपने भाग्य को बदलने की कला है, अपने विकास और सफलता की कला है। हम सम्मोहन के मायाजाल से हटकर देखना सीख जाएं तो सफलता निश्चित है।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> [books@jvbharati.org](mailto:books@jvbharati.org)

## सम्यक दर्शन कार्यशाला का आयोजन

### विजयनगर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा- 4 के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित सम्यक दर्शन कार्यशाला तेयुप विजयनगर के अंतर्गत करवाई गई। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ने भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त मुख्य तीन सिद्धांतों अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह पर विस्तार से बताया। अभातेयुप एवं समण संस्कृति संकाय द्वारा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित पुरुषोत्तम महावीर पर आधारित पुस्तक पर परीक्षा की तैयारी हेतु साध्वीश्री ने सबको अध्ययन एवं स्वाध्याय करने

की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने आरंभी हिंसा, उद्योगी हिंसा और विरोधी हिंसा के बारे में विवेचन किया।

साध्वीश्री ने भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त कठिन पर उपकारी सिद्धांत 'सब जीवों से मैत्री और शत्रुता का अभाव' के बारे में बताते हुए इसे आज के युग की जरूरत बताया। साध्वीश्री ने आज के विरोधाभासों को समझाते हुए अनेकांतवाद के सिद्धांत की प्रासंगिकता पर बल दिया। इस अवसर पर स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

संयोजक पवन बैद का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा

58वें वार्षिक अधिवेशन पर प्रदत्त अलंकरण एवं पुरस्कार



**विमल कटारिया**  
युवा गौरव पुरस्कार



**अनिल बैद**  
आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार



**विपिन पितलिया**  
आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार

जैन विश्व भारती द्वारा

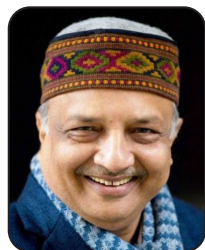
प्रदत्त पुरस्कार



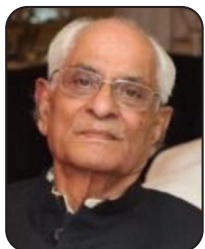
**डॉ.सुषमा सिंघवी**  
आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार



**अरुण बोथरा**  
प्रज्ञा पुरस्कार



**राजेश चेतन**  
आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार



**बुधमल दुगड़**  
संघ सेवा पुरस्कार



**विमला डागलिया**  
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा

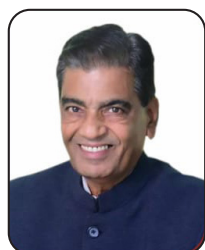
प्रदत्त पुरस्कार एवं सम्मान



**सुरेन्द्र बोरड़**  
तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार



**किशनलाल डागलिया**  
तेरापंथ संघ सेवा सम्मान



**जयंतीलाल सुराणा**  
आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार



**डॉ. राज सेठिया**  
तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार



**सुरेशचन्द्र गोयल**  
तेरापंथ संघ सेवा सम्मान



**लक्ष्मीलाल बाफना**  
आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार

पृष्ठ 19 का शेष

युवाओं की सही दिशा में ऊर्जा ही देश की प्रगति को सुनिश्चित कर सकती है

पूरी से लोकसभा सांसद संबित पात्रा ने तेरापंथ धर्म संघ के अनुशासन और अभातेयुप के रक्तदान अभियान की सराहना की। पात्रा ने युवाओं को देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुधारों में प्रमुख भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि युवाओं की सही दिशा में ऊर्जा ही देश की प्रगति को सुनिश्चित कर सकती है। ताइवान के प्रसिद्ध उद्योगपति टेको ग्रुप के चेयरमैन यू जिन ह्वांग ने भी उपस्थित युवाशक्ति को सम्बोधित किया। इम्पेक्ट फोरम में MBDD, हिट युवा फिट युवा, टीटीएफ, सरगम आदि आयामों के आयाम प्रभारियों ने अपनी प्रस्तुति देते हुए आगामी कार्यक्रमों का रोडमैप प्रस्तुत किया। शाखा मूल्यांकन एवं सम्मान के क्रम में शाखा परिषदों द्वारा उनके द्वारा वर्ष भर विभिन्न आयामों के आयोजन हेतु उन्हें सम्मानित किया गया। सायंकालीन सत्र में युवाशक्ति ने गुरु इंगितानुसार शनिवारिय सामायिक में अपनी

सहभागिता दर्ज करवाई। वार्षिक साधारण सभा का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश डागा की अध्यक्षता में हुआ। महामंत्री श्री अमित नाहटा द्वारा मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

तृतीय दिवस

अधिवेशन का तृतीय दिवस शाखा मूल्यांकन एवं अलंकरण के नाम रहा। सदस्य संख्या के अनुसार परिषदों को पांच श्रेणियों लघु, मध्यम, विशाल, वृहद और विराट में विभाजित कर सेवा, संस्कार, संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों में किये गए कार्यों के अनुसार परिषदों को सम्मानित किया गया। सेवा संस्कार संगठन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु तेयुप विजयनगर और अहमदाबाद को संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ शाखा अलंकरण प्रदान किया गया। सेवा, संस्कार और संगठन के क्षेत्र में विशिष्ट परिषदों को भी सम्मानित किया गया। आगामी वर्ष में नव ऊंचाइयों को छूने के संकल्प के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

अभातेयुप द्वारा शाखा मूल्यांकन के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कृत परिषदों की सूची (सत्र 2023-24)

लघु श्रेणी (1 से 60 सदस्य)

सेवा		संस्कार		संगठन	
प्रथम	टी दासरहल्ली	प्रथम	बांद्रा	प्रथम	ऐरोली
द्वितीय	कटिहार	द्वितीय	सिरसा	द्वितीय	चेम्बूर
तृतीय	बेल्लारी	तृतीय	केलवा	तृतीय	सैथिया

मध्यम श्रेणी (61 से 125 सदस्य)

सेवा		संस्कार		संगठन	
प्रथम	छ: संभाजीनगर	प्रथम	बारडोली	प्रथम	सरदारपुरा (जोधपुर)
द्वितीय	पाली	द्वितीय	फरीदाबाद	द्वितीय	वसई
तृतीय	बोइसर	तृतीय	अमराइवाड़ी	तृतीय	बडोदरा

विशाल श्रेणी (126 से 250 सदस्य)

सेवा		संस्कार		संगठन	
प्रथम	डोंबिवली	प्रथम	राजाजीनगर	प्रथम	साउथ कोलकाता
द्वितीय	इंदौर	द्वितीय	भायंदर	द्वितीय	सांताकुज
तृतीय	मैसूर	तृतीय	हुबली	तृतीय	नालासोपारा

वृहद श्रेणी (251 से 500 सदस्य)

सेवा		संस्कार		संगठन	
प्रथम	पर्वत पाटीया	प्रथम	पूर्वांचल कोलकाता	प्रथम	साउथ हावड़ा
द्वितीय	भीलवाड़ा	द्वितीय	मलाड	द्वितीय	गंगाशहर
तृतीय	रायपुर	तृतीय	सिलीगुड़ी	तृतीय	कांदीवली

विराट श्रेणी (501+ सदस्य)

सेवा		संस्कार		संगठन	
प्रथम	दिल्ली	प्रथम	जयपुर	प्रथम	उदयपुर
द्वितीय	उधना	द्वितीय	गुवाहाटी	द्वितीय	हैदराबाद

# अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 'हम' का हुआ समायोजन

■ युवा शक्ति ने पाई आचार्य प्रवर से नव ऊर्जा | ■ चारित्रात्माओं एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने किया संबोधित

**अ**खिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का 58 वां राष्ट्रीय अधिवेशन रहमर पूज्य गुरुदेव युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में 23-24-25 अगस्त 2024 को वस्त्र एवं डायमंड नगरी सूत के संयम विहार परिसर में आयोजित हुआ। पूज्य गुरुदेव से मंगल पाठ श्रवण के साथ त्रिदिवसीय अधिवेशन का आगाज हुआ।

## प्रथम दिवस

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आयोजित मंचीय कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अभातेयुप द्वारा गत वर्ष में आयोजित सभी कार्यक्रमों की जानकारी पूज्यप्रवर को निवेदित करते हुए कहा कि तेरापंथ की युवा शक्ति गुरु इंगित की आराधना करते हुए संघ एवं समाज के विकास में योगभूत बन रही है। कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने युवकों को ज्ञान और विवेक संपन्न बनने की प्रेरणा प्रदान की। अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने अभातेयुप को श्रद्धाशील, आस्थाशील श्रावकों के निर्माण का कारखाना बताया।

## जैन समाज पूरे देश के लिए रोल मॉडल है

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लोकसभा सांसद तेजस्वी सूर्या ने युवाओं के बीच अपनी सारगर्भित अभिव्यक्ति में कहा कि जैन समाज पूरे देश के लिए रोल मॉडल है। हर संकट की घड़ी में जैन समाज देश की सेवा में अग्रणी रहता है। संख्या छोटी है लेकिन प्रभाव बड़ा है। सांसद सूर्या ने आगे कहा कि विश्व के सबसे बड़े रक्तदान शिविर का आयोजन अभातेयुप ने किया है, यह अभिनन्दनीय है। जैन समाज के युवा रक्त लेने का नहीं, देने का काम करते हैं। गुरुदेव का नशामुक्ति का संदेश युवा शक्ति को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से सशक्त बना रहा है। नशामुक्ति देश के युवाओं को सुदृढ़ बनाने का संदेश है। 2047 तक भारत विकसित देश बनेगा, लेकिन युवाओं का चरित्र निर्माण होगा तभी भारत वैश्विक महाशक्ति बन सकेगा। अभातेयुप के माध्यम से युवाओं को Innovation, Entrepreneurship भी सिखाया जाता है तो सेवा, संस्कार एवं संगठन के गुरु भी सिखाए जाते हैं। हम सब साथ मिलकर भारत की विरासत को, गुरु परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य करते रहेंगे।

## एक प्राणवान संगठन है अभातेयुप

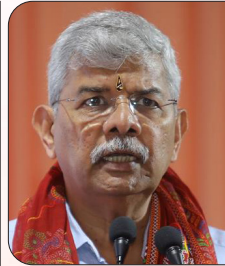
बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि दिनेशकुमारजी ने युवाओं को अम्बोधित करते हुए कहा कि एक गुरु एक विधान के घोष पर चलने वाला धर्मसंघ है तेरापंथ। इसका एक प्राणवान संगठन है अभातेयुप, इसके बराबर कोई दूसरा संगठन नहीं है। यह संगठन युगीन है, अपनी अलग पहचान रखने वाला है। युवकों का



**डॉ. संबित पात्रा**  
सांसद, लोकसभा  
राष्ट्रीय प्रवक्ता,  
भारतीय जनता पार्टी



**यू जिन ह्वांग**  
चेयरमैन  
टेको ग्रुप,  
ताइवान



**अनंत पंधारे**  
वाइस चेयरमैन  
इंडियन रेड क्रॉस  
सोसाइटी



**तेजस्वी सूर्या**  
लोकसभा सांसद  
एवं अध्यक्ष, भारतीय  
जनता युवा मोर्चा

अभातेयुप द्वारा शाखा मूल्यांकन के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ एवं विशिष्ट परिषद् पुरस्कार की घोषणा (सत्र 2023-24)

- सर्वश्रेष्ठ परिषद् - तेयुप विजयनगर
- सर्वश्रेष्ठ परिषद् - तेयुप अहमदाबाद
- सेवा में विशिष्ट परिषद् - तेयुप सूत
- संस्कार में विशिष्ट परिषद् - तेयुप चेन्नई
- संगठन में विशिष्ट - तेयुप गांधीनगर बेंगलुरु

संस्कारों से समझौता न करें, चाहे उनके ऊपर किसी भी प्रकार का सामाजिक दबाव क्यों न हो।

## द्वितीय दिवस

अधिवेशन के द्वितीय दिवस इम्पेक्ट फोरम का आयोजन किया गया।

## मैं कुछ होना चाहता हूँ

अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने सम्भाषियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि 60 साल की संपन्नता का यह अवसर और इस मौके पर कुछ परिवर्तन महसूस हो रहा है। कुछ नया करने की तड़फ परिलक्षित हो रही है। आगमों में एक सूक्त आता है- मैं कुछ होना चाहता हूँ, मैं कुछ करना चाहता हूँ। हमें कुछ नया करना है, यह हमारा संकल्प है। हम इतने सक्षम बनें कि बाह्य स्थितियों से प्रभावित होने के स्थान पर उनको बदल सके।

अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने अभातेयुप के आयामों की चर्चा करते हुए आगामी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी के वाइस चेयरमैन अनंत पंधारे ने रक्त दान के क्षेत्र में अभातेयुप के कार्यों की प्रशंसा करते हुए अभातेयुप के साथ रक्तदान के क्षेत्र में कार्य करने की घोषणा की।

(शेष पेज 18 पर)

पहला चिंतन बिंदु है परिवार का संगठन मजबूत बना रहे। सेवा ऐसा तत्व है जिससे सामने वाले से हमारा विशेष जुड़ाव हो जाता है। लौकिक व लोकोत्तर दोनों सेवा का महत्व है। युवकों से संगठन की शोभा है, संगठन से युवकों की शोभा है और दोनों से संघ की शोभा है। आपके संस्कार इतने पुष्ट हो जिससे भावी पीढ़ी भी संस्कारित बनेगी। हर युवक नशामुक्त रहे, मांसाहार से दूर रहे। संस्कार और धार्मिकता हर परिवार में रहनी चाहिए।

## 'किंग मेकर' नहीं, 'कार्यकर्ता' बनें

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदितकुमारजी ने युवाओं को संगठन सुदृढ़ीकरण के सूत्र देते हुए कहा कि तेयुप से जुड़े युवा अपने-अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं, लेकिन जो समय उनके पास है, उसका पूरा उपयोग करते हैं। युवाओं में समर्पण का भाव होना चाहिए- अपने कार्य, समाज, शासन, और संगठन के प्रति। कुछ सदस्य, जो तकनीकी उम्र पार कर चुके हैं, फिर भी तेयुप के प्रति सक्रिय हैं। इसमें कोई समस्या नहीं

है, लेकिन उन्हें 'किंग मेकर' नहीं, 'कार्यकर्ता' की भूमिका में रहना चाहिए।

## जीवन में संतुलन बनाए रखें

मुनि कुमारश्रमण जी ने कहा कि यह एक भ्रांति है कि युवाओं में धर्म के प्रति रुचि नहीं है, और इसके प्रमाण के रूप में युवक परिषद् को देखा जा सकता है। उन्होंने युवाओं को अपने जीवन में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें परिवार, व्यवसाय, और सामाजिक कार्यों के बीच सही तालमेल होना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों के लिए समय निकालना आवश्यक है, जैसे कि स्वाध्याय, माला जप, और ध्यान। उन्होंने यह भी कहा कि युवक परिषद् का मुख्य उद्देश्य धर्म की सेवा करना है और इसके लिए ज्ञान आवश्यक है। मुनिश्री ने विशेष रूप से नशे से दूर रहने और अपने संस्कारों को मजबूत बनाए रखने पर जोर दिया। उन्होंने युवाओं को प्रेरित किया कि वे किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म और

## अभातेयुप धार्मिक दृष्टि से तेरापंथ समाज की सेना के रूप में उभरती रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

सूत्र।

23 अगस्त, 2024

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का 58वां वार्षिक अधिवेशन परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में प्रारंभ हुआ। युवा शक्ति को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युवामनीषी ने फरमाया- अभातेयुप पूरी तरह से सामाजिक संस्था नहीं है। यह धर्म एवं धार्मिकता से जुड़ी हुई संस्था है। कितने युवक और किशोर इससे जुड़े हुए हैं, जिससे संभव है कि वे कई गलत बातों से बच जाते होंगे। युवकों के पास परिवार, व्यापार आदि का दायित्व होता है और उसके साथ अभातेयुप की गतिविधियों के लिए अपनी सेवाएँ देते हैं, समय निकालते हैं, यह भी एक विशेष बात है। युवकों के पास जो शक्ति होती है, उसका अच्छा उपयोग हो तो समाज और देश के निर्माण में अच्छी सफलता भी प्राप्त की जा सकती है।

युवकों द्वारा 'युवा वाहिनी' के अंतर्गत रास्ते की सेवा का एक अच्छा क्रम है। रास्ते की सेवा से युवकों को साधु-साध्वियों की सेवा का मौका मिलता है। 'तेरापंथ टाइम्स' तेरापंथ समाज के



'तेरापंथ टाइम्स' तेरापंथ समाज के समाचारों को जानने का अच्छा माध्यम है, जिसके द्वारा तेरापंथ समाज के अनेक समाचार एवं अनेक जानकारियाँ समाज को एवं पढ़ने वालों को प्राप्त हो सकती हैं। अखबार के रूप में तेरापंथ समाज में केवल 'तेरापंथ टाइम्स' ही है, जिसमें समाज के साधु-साध्वियों, गुरुकुलवास की न्यूज आदि आती हैं। मासिक पत्रिका 'युवादृष्टि' भी है।

का मनोभाव रहे, सद्भावना रहे एवं अच्छे संस्कार भी पुष्ट होते रहें।

आत्मोद्धारक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम की अमृत देशना फरमाते हुए कहा कि शब्द, रूप, रस, गन्ध व स्पर्श ये पांच इंद्रियों के पांच विषय हैं। इनके प्रति जिसका मोह हो जाता है, वह आदमी उन विषयों के सेवन में, उनके दलदल में निमग्न हो जाता है और उसमें डूब जाता है। विषय सारे मिले या ना मिले पर मानसिक स्तर पर वह उनमें डूबा रह सकता है।

अध्यात्म की साधना के लिए इन्द्रियों और विषयों का संयम आवश्यक होता है। इंद्रियों का संयम दो प्रकार से हो सकता है, इन्द्रियों का निरोध करना और इन्द्रिय विषयों में राग-द्वेष नहीं करना। इन्द्रियाँ ही आदमी को बाहर के जगत से जोड़ने वाली होती हैं।

जो मनुष्य इन्द्रियों का निरोध कर लेता है, मानों इसका बाह्य जगत से सम्पर्क टूट-सा जाता है। बाहर से सम्पर्क तोड़कर मनुष्य जब भीतर की ओर जाता है तो वह साधना की ऊँचाई की ओर बढ़ सकता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी सर्वेन्द्रिय संयम का प्रयोग करते थे। (शेष पेज 16 पर)

समाचारों को जानने का अच्छा माध्यम है, जिसके द्वारा तेरापंथ समाज के अनेक समाचार एवं जानकारियाँ समाज को एवं पढ़ने वालों को प्राप्त हो सकती हैं। अखबार के रूप में तेरापंथ समाज में केवल 'तेरापंथ टाइम्स' ही है, जिसमें समाज के साधु-साध्वियों, गुरुकुलवास की न्यूज आदि आती हैं। मासिक पत्रिका 'युवादृष्टि' भी है। 'तेरापंथ टाइम्स' के अंतर्गत आपदा-विपदा में सेवा के

लिए युवक आगे आते हैं और लौकिक सेवा के रूप में लोगों को बचाने का कार्य भी करते हैं। अभातेयुप धार्मिक दृष्टि से एक अंश में तेरापंथ समाज की सेना के रूप में उभरती रहे और किशोर नई सेना के रूप में सामने आते रहें।

समय-समय पर समीक्षा भी होती रहनी चाहिए। किसी गतिविधि में कोई कमी लगे तो उसकी पूर्ति करें, कोई गलती हो तो उसको खोजें। क्या नई गतिविधि, नया

कार्य शुरू किया जा सकता है और क्या छोड़ा जा सकता है, उस पर समीक्षापूर्ण चिंतन करें। संगठन में नया जोड़ने एवं अनपेक्षित पुराने को छोड़ने की प्रक्रिया चलती रहे तो विकास हो सकता है। यह अधिवेशन शुरू हुआ है। तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्यों में धार्मिक चेतना और भावना पुष्ट होती रहे। युवकों में अपनी शक्ति का अच्छे कार्यों में नियोजन करने का लक्ष्य रहे, अपने जीवन में ईमानदारी

### आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

